विनोद कुमार शुक्ल के काव्य में मध्यवर्गीय जीवन

पाठ्यक्रम कोड़ एवं शीर्षक: HIN-675 शोध प्रबंध

श्रेयांक: 16

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

शोधार्थी

प्रियंका संदेश सत्तरकर

अनुक्रमांक: 22P0140029

PR Number: 201812252

मार्गदर्शक

दीपक प्रभाकर वरक

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

परीक्षक: दीपक प्रभाकर वरक

Seal of the School

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Dissertation report entitled, **"विनोद कुमार शुक्ल के काव्य में मध्यवर्गीय जीवन"** is based on the results of investigations carried out by me in the Discipline of Hindi at Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University under the Supervision of Mr. Deepak Prabhakar Varak and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the dissertation. I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

Priyanka Sandesh Sattarkar

22P0140029

Date: 16 April 2024

Place: Goa University

COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation report "**विनोद कुमार शुक्ल के काव्य में मध्यवर्गीय जीवन**" is a bonafide work carried out by Ms. Priyanka Sandesh Sattarkar under my supervision in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Master of Arts in the Discipline of Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

Deepak Prabhakar Varak

Date: 16 April 2024

Prof. Anuradha Wagle

Dean, SGSLL, Goa University

GOA UNIVERSITY * TALEIGAON PLATEAU * SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE

School Stamp

Date: 16 April 2024

Place: Goa University

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Internship report entitled, **"विनोद कुमार शुल्क के काव्य में मध्यवर्गीय जीवन"** is based on the results of investigations carried out by me in the Master of Arts in Hindi at the Shenoi Goembab Languages and literature, Goa University, under the mentorship of Mr. Deepak Prabhakar Varak and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the internship report/work.

I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

Priyanka Sandesh Sattarkar

22P0140029

Date: 02 May 2024

Place: Goa University

COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the internship report **"विनोद कुमार शुक्ल के काव्य में मध्यवर्गीय जीवन"** is a bonafide work carried out by Ms. Priyanka Sandesh Sattarkar under my mentorship in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Masters in the Discipline Master of Arts in Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

Deepak Prabhakar Varak

Date: 02 May 2024

GOA UNIVERSITY
SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE
TALEIGAON PLATEAU

School Stamp

Prof. Anuradha Wagle

Dean, SGSLL, Goa University

Date: 02 May 2024

Place: Goa University

ATMANIRBHAR BHARAT
SWAYAMPURNA GOA

गोंय विद्यापीठ
ताळगांव पठार,
गोंय – ४०३ २०६
फोन : +९१-८६६९६०९०४८

Goa University
Taleigao Plateau, Goa-403 206
Tel : +91-8669609048
Email : registrar@unigoa.ac.in
Website : www.unigoa.ac.in

(Accredited by NAAC)

Ref. No.: GU/LIB/ATTENDANCE CERT./2024/223 Date: 2/05/2024

TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Miss Priyanka Sandesh Sattarkar, a student of Goa University, M.A. (Hindi), visited the Goa University Library for her reference work on the following dates and completed 28 Hours & 36 Minutes of research internship as a part of her M.A. dissertation.

The detailed dates and times she visited are attached herewith.

This certificate has been issued at the written request of Assistant ProfessorMr. Deepak Varak.

University Librarian
(Dr. Sandesh B. Dessai)

Dr. Sandesh B. Dessai
UNIVERSITY LIBRARIAN
Goa University
Taleigao - Goa.

GOA UNIVERSITY LIBRARY GOA

VISITS TO THE GOA UNIVERSITY LIBRARY

SR. NO.	DATE	TIME	HOURS
1.	19/6/23	10:55 to 12:01	1h 6 mins
2.	23/6/23	11:39 to 12:22	43 mins
3.	14/7/23	1:50 to 2:41	1h 51 mins
4.	28/7/23	5:10 to 6:05	1h 55 mins
5.	1/8/23	4:13 to 6:00	1h 47 mins
6.	2/8/23	5:30 to 6:00	30 mins
7.	3/8/23	4:52 to 6:15	1h 23 mins
8.	4/8/23	3:55 to 4:20	25 mins
9.	4/9/23	4:10 to 4:20	10 mins
10.	14/9/23	10:40 to 10:45	5 mins
11.	25/09/23	11:32 to 12:39	1h 11 mins
12.	27/09/23	3:30 to 4:25	55 mins
13.	4/10/23	4:15 to 4:45	30 mins
14.	9/10/23	3:10 to 3:35	25 mins
15.	17/10/23	3:1[illegible]	44 mins
16.	19/10/23	5:11 to 5:40	29 mins
17.	31/10/23	10:38 to 11:25	47 mins
18.	17/11/23	1:52 [illegible]	13 mins
19.	24/11/23	12:[illegible]	35 mins
20.	29/11/23	5:1[illegible]	59 mins
21.	12/12/23	2:4[illegible]	2h 8 mins
22.	20/12/23	2:4[illegible]	1h 10 mins
23.	29/12/23	2:[illegible]	1h 4mins
24.	30/1/24	1:[illegible]	5 mins
25.	27/2/24	1:4[illegible]	1h 5 mins

26.	15/3/24	11:45 to 12:36	46 mins
27.	27/3/24	10:52 to 11:50	58 mins
28.	8/4/24	1:17 to 5:18	4h 1min
29.	10/4/24	3:43 to 4:19	36 mins
Total Hours			**28 Hours 36 Minutes**

Signature of the Guide
Asst. Prof. Deepak Varak

Signature of the University Librarian
Dr. Sandesh B. Dessai

02/04/2024

Signature of the Student
Miss Priyanka Sandesh Sattarkar

अनुक्रम

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	कृतज्ञता ज्ञापन	xi, xii
	अनुक्रम	vi, vii
	भूमिका	viii, ix, x
1	मध्यवर्गीय जीवन : अवधारणा एवं स्वरूप	01-04
	1.1 उद्‌भव	04-06
	1.2 अर्थ एवं परिभाषा	06-12
	1.3 मध्यवर्गीय : वर्गिकरण एवं परिस्थितियाँ	12-18
2	समकालीन कविता का परिदृश्य	
	2.1 समकालीन कविता : स्वरूप एवं परिभाषा	22-32
	2.2 समकालीन कविता की प्रवृतियाँ	32-42
3	विनोद कुमार शुक्ल के काव्य में मध्यवर्गीय जीवन	47-48
	3.1 सामाजिक जीवन	48-53
	3.2 राजनीतिक जीवन	54-59
	3.3 आर्थिक जीवन	59-64
	3.4 पारिवारिक जीवन	65-71

4	विनोद कुमार शुक्ल की भाषा शैली 4.1 भाषा 4.2 शब्द चयन 4.3 प्रतिकात्मक शैली 4.4 चित्रात्मक शैली 4.5 वर्णनात्मक शैली	 75-79 79-80 80-81 81-82 82-85
	उपसंहार	87-91
	संदर्भ	92-95

भूमिका

विनोद कुमार शुक्ल समकालीन साहित्यकार हैं। उन्होंने अनेक विधाओं में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। लेखक ने अपनी कविताओं में विविध विषयों को दर्शाया है। रचनाकार की मूल संवेदना यह रही है कि समाज की सभी समस्याओं को अपनी कविता के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत कर सके। कवि ने अपनी कविताओं में मध्यवर्गीय जीवन की विसंगतियों को बारीकी से दर्शाया है। कवि ने यह जीवन स्वयं जिया है, इसी कारण उन्होंने अपनी कविताओं में मध्यवर्ग की सभी विडम्बना को दिखाया है।

मध्यवर्गीय समस्या समाज का एक अत्यंत प्रासंगिक विषय है। मध्यवर्ग एक भ्रामक शब्द है। यह उच्च और निम्न के बीच वाला वर्ग है। यह वर्ग हर समय समाज से जुड़ा हुआ होता है। मध्यवर्ग इस शब्द से ज्ञात होता है कि यह एक ऐसा वर्ग है जो समाज पर आधारित होता है जो अपने हक़ के लिए नहीं लड़ पता और यह वर्ग ज्यादा धनी भी नहीं होते है और न गरीब। यह वर्ग अन्य वर्ग से अधिक सामाजिक और पारिवारिक होता है। इस वर्ग में एक जैसे मनुष्यों का होना अनिवार्य नहीं है, इसमें सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से भिन्न सदस्य भी आते है।

निर्धारित शोध प्रबंध **"विनोद कुमार शुक्ल के काव्य में मध्यवर्गीय जीवन"** पर आधारित है। जिसमें कवि की चार कविता संग्रह "अतिरिक्त नहीं", "सब कुछ होना बचा रहेगा", "वह आदमी नया गरम कोट पहिनकर चला गया विचार की तरह" और "कविता से लंबी कविता" इन में से चयनित मध्यवर्ग पर आधारित कविताओं पर किया है। मध्यवर्ग की समस्याओं पर जैसे 'सामाजिक', 'राजनैतिक', 'आर्थिक', और 'पारिवारिक' पर बात की है। हमारे समाज में वर्ग व्यवस्था बहुत जटिल है की उनमें भेदभाव होता रहता हैं।

इस शोध प्रबंध को चार अध्यायों में बांटा गया है। प्रथम अध्याय **'मध्यवर्गीय जीवन : अवधारणा एवं स्वरूप'** है, जिसमें मध्यवर्ग के उद्भव, मध्यवर्ग का अर्थ एवं परिभाषा और उसके वर्गिकरण और परिस्थितियों पर प्रकाश डाला गया है। द्वितीय अध्याय **'समकालीन कविता का परिदृश्य'** है, जिसके अंतर्गत समकालीन कविता का स्वरूप, परिभाषा और समकालीन कविता की प्रवृतियों पर बात की गयी है। तृतीय अध्याय **'विनोद कुमार शुक्ल के काव्य में मध्यवर्गीय जीवन'** पर आधारित है जिसमें मध्यवर्ग की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक स्थितियों पर बात कर उन समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। चतुर्थ अध्याय जो इस शोध प्रबंध का अंतिम अध्याय हैं इसमें कवि की **'भाषा शैली'** पर बात की है जिसमें उनकी भाषा, शब्द चयन, उनकी

प्रतिकात्मक शैली, चित्रात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, आदि पर प्रकाश डाला गया हैं, और अंत में उपसंहार और ग्रंथ सूची जोड़ी गयी है।

कृतज्ञता ज्ञापन

कोई भी शोध कार्य करने के लिए एक मार्गदर्शक की जरूरत होती है। प्रस्तुत शोध कार्य पूर्ण करने में मेरे मार्गदर्शक सहायक अध्यापक दीपक प्रभाकर वरक जी के मार्गदर्शन, प्रेरणा और प्रोत्साहन के कारण मैं अपना लघु शोध प्रबंध पूर्ण कर पायी। आपने मेरी जिज्ञासाओं को दूर कर मुझे मेरे लघु शोध प्रबंध से संबंधित अनेक विषयों से परिचित करवाया इस कारण मैं यह शोध कार्य पूरा कर पायी। आपने अपने व्यस्त समय होने के पश्यात भी मुझे मार्गदर्शन दिया, मुझे अनेक पुस्तकों से परिचित करवाया उसके लिए मैं आपका हृदयपूर्वक कृतज्ञता प्रकट करती हूँ।

शणै गोंयबाब भाषा एवं साहित्य संकाय की उप अधिष्ठाता प्रो. वृषाली मांद्रेकर जी ने मुझे यह शोध प्रबंध करने में प्रत्साहित किया इस लिए मैं आपकी शुक्रगुजार हूँ। हिंदी अध्ययन शाखा के निदेशक डॉ. बिपिन तिवारी का भी आभार प्रकट करती हूँ जिनका इस शोध प्रबंध में मार्गदर्शन रहा। मैं मेरे अध्यापक अदित्या सिनाई भांगी जी के प्रति आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने मुझे इस शोध से संबंधित जानकारी प्राप्त करने में मदद की। हिंदी विभाग के अन्य सहायक प्राध्यापक श्वेता गोवेकर, मनीषा गावडे और ममता वेर्लेकर ने भी मेरी इस शोध प्रबंध में मदद की इसलिए आप सब के प्रति मैं आभार प्रकट करती हूं।

उसी के साथ उन सभी प्रियजनों की भी आभारी हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से मेरी इस शोध प्रबंध को पूर्ण करने में सहायता की। शोध संबंधित सामग्री उपलब्द करने के लिए गोवा विश्वविद्यालय के ग्रंथालय और वहां उपस्थित कर्मचारियों की मैं आभारी हूँ जिन्होंने मुझे किताबें ढूँढने में मदद की। उसी के साथ कृष्णदास शामा केंद्रीय ग्रंथालय गोवा की भी मैं आभारी हूं।

मैं अपने माता-पिता, समस्त परिवार और अपने दोस्तों की भी आभारी हूँ जिन्होंने मेरे शोध प्रबंध के दौरान मेरी सहायता की।

दिनांक: 16 अप्रैल 2024 प्रियंका संदेश सत्तरकर

मध्यवर्गीय जीवन : अवधारणा एवं स्वरूप

जब एक समाज के व्यक्ति एक ही तरह के संस्कृति के बीच रहते हैं तो एक वर्ग का निर्माण होता है। इस प्रकार वर्ग एक ऐसे व्यक्तियों का गठन है जिनकी सामाजिक स्थिति एक समान हो। समाज में वर्गों को एक विशेष नाम दिया जाता है; जैसे पूंजीपति और श्रमिक वर्ग।

कुछ विशेष विद्वानों ने समाज के वर्गों की परिभाषाएं इस तरह से दी है।

- लेपियर के अनुसार "एक समाजिक वर्ग सुस्पष्ट सांस्कृतिक समूह है जिसको संपूर्ण जनसंख्या में एक विशेष स्थान अथवा पद प्रदान किया जाता है।"[1]
- मैकाइवर तथा पेज के अनुसार "एक सामाजिक वर्ग एक समुदाय का कोई भी भाग है जो सामाजिक स्थिति के आधार पर अन्य लोगों से भिन्न है।"[2]
- ऑगबर्न तथा निमकॉफ के अनुसार "सामाजिक वर्ग व्यक्तियों का एक ऐसा योग है जिसका किसी समाज में निश्चित रूप से एक समान स्तर होता है।"[3]

- क्यूबर के अनुसार "एक सामाजिक वर्ग अथवा सामाजिक स्तर जनसंख्या का एक बड़ा भाग अथवा श्रेणी है जिसमें सदस्यों का एक ही पद अथवा श्रेणी होती है।"[4]
- वेबर के अनुसार "वर्ग व्यक्तियों का एक समूह हैं। इसके सदस्य बाजार अर्थव्यवस्था में ज्यादा लाभ लेने के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। बाजार वह है, जहाँ वस्तुओं का विनिमय होता हैं। किसी भी व्यक्ति की व्यावसायिक योग्यता का परिणाम बाजार भाव से ही मिलता हैं।"[5] अर्थात वर्ग एक प्रतिष्ठा समूह हैं जिसके पास अपना खुद का बल होता हैं।
- एंथोनी गिडेंन्स के अनुसार "एक वृहत् स्तर पर वर्ग लोगों का समूह है जिनकी आर्थिक संसाधनों को प्रभावित करते हैं। वर्ग भेद के दो आधार है-धन का स्वामित्व, तथा इससे जुड़ा हुआ व्यवसाय।"[6]
- वर्ग व्यवस्था पर बहुत गहराई से विचार विमर्श करनेवाले मार्क्स के अनुसार "ऐसी आर्थिक स्थिति में जब लाखों परिवार जीवन बिताते हैं तो उन्हें उनके जीवन प्रणाली उनके हेतुओं, उनकी संस्कृति व दूसरे वर्गों से विमुख कर देती है और उन्हें शत्रुतापूर्ण विरोधी खेमें में ला देती है, वर्ग कहलाती है।"[7]

भारतीय प्रथा में वर्ग की अवधारणा है और इसीलिए इसका जो शास्त्रीय अभिप्रायः विदेशी में लिया जाता है, इसका खुलासा किया जाना चाहिए प्रमुख बात यह है कि वर्ग खुले होते हैं। आज का मजदूरी करने वाला व्यक्ति कल एकाएक मेहनती होकर उच्च वर्ग में पहुंच सकता है। वर्ग के दरवाजे खुले होते हैं जिसमें कोई भी प्रवेश कर सकता है तथा कोई बाहर भी निकल सकता है।

उपर्युक्त परिभाषाओं का आधार लेकर यह कहा जा सकता है कि समाज में उपस्थित वर्ग लगभग समान स्थिति वाले मनुष्य का एक समूह है। जो धन को समाहित करता है, तथा व्यवस्था के जरिए धन को अपनाता है। प्रत्येक वर्ग की आर्थिक स्थिति भिन्न-भिन्न रहती है। समाज में वर्गों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। सामाजिक वर्गों के संबंध में समाज में अनेक धारणाएं प्रचलित है। थोड़े लोगों का मानना है कि समाज में केवल दो वर्ग है; उच्च वर्ग और निम्न वर्ग। अर्थात अमीर और गरीब। हालांकि समाज में तीन रूपों से वर्गों की स्थापना की जाती है उच्च वर्ग, मध्यवर्ग, और निम्न वर्ग। किंतु भारतीय समाज में सिर्फ दो प्रकार के वर्गों को आसानी से देखा जा सकता है। भारत में मध्यम वर्ग की उत्पत्ति आजादी के उपरांत हुई है। मध्यम वर्ग एक प्रकार का वर्ग है जिसमें लोग एक तरह के बाजार की स्थिति, काम की दशा और प्रतिष्ठा से

काम करते हैं, और निम्न मध्यवर्ग वह वर्ग है जो मध्यवर्ग में होते हुए भी अनदेखा रहता है.

1.1 उद्भव

समाज में मध्यवर्ग का व्यवस्थित रूप से उदय की शुरुआत अंग्रेज साम्राज्य से हुई थी। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में समाज में यह वर्ग दिखाई देने लगा था। मूल रूप से यह वर्ग अंग्रेजों के शासन के अंत में दिखाई देने लगा था। अंग्रेज साम्राज्य से पूर्व पूंजीवादी वृक्ष के जनक संस्थाओं की भारत में कोई कमी नहीं थी। पहले भारत शिल्प उद्योग तथा व्यावसायिक विशेषता तथा बहुत रूपों से अलग व्यापारी वर्ग रहा है। ब्रिटिश के आगमन से पूर्व भारत में सामाजिक संबंध और वर्ग संरचना में क्रांति थी। मध्यम वर्ग हमेशा समाज के सामान्य व्यक्तियों एवं प्रशासन के बीच तालमेल रखने की भूमिका रखता है।

विदेशों में मध्यवर्ग का उदय बहुत पहले से हुआ था किंतु भारत में इस प्रकार की वर्ग संरचना नहीं थी। 'ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी' जिन व्यापारों के संबंध का अनुकरण कर रही थी; उसे स्थापित करके ब्रिटिशों ने मध्यवर्ग के निर्माण को धरातल प्रदान कर दिया। अंग्रेजों ने अपनी सहायता के लिए अपनी शैक्षिक नीति के एक भाग के रूप में भारत के प्रशासन में अपने से हूबहू वर्ग स्थापित करने का प्रयास किया।

अंग्रेजों का लक्ष्य समाज के सभी वस्तुओं का अनुकरण करने हेतु केवल एक वर्ग निर्माण करना था। भारत के समाज में जो मध्यवर्ग का रूप आज देखने को मिल रहा है, वह अंग्रेजों के आगमन के पूर्व नहीं था। समाज में मध्यवर्ग का कोई अस्तित्व नहीं था। मध्यवर्ग के पास की संवेदनशीलता को सबसे ज्यादा अंग्रेज शासक व्यवस्था ने प्रभावित किया है। अतः मध्यम वर्ग का उदय आर्थिक एवं तकनीकी बदलाव के कारण हुआ है। अंग्रेज जब भारत में आए थे तब वह अर्थ के उद्देश्य से आए थे। अर्थ के तंत्र ने अंग्रेजों के साथ-साथ कुछ भारतीयों को भी अपने साथ समेट लिया था। अतः ऐसा भी कहा जाता है कि भारत में परंपरागत मध्यवर्ग व्यापरीकरण और औद्योगीकरण के पश्चात आया है।

"योगेंद्रसिंह ने सोशल चेंज इन इंडिया: क्राइसिस एंड रेसिलियंस 1993 मैं कहा है कि भारत में मध्यम वर्ग का उदय व्यापरीकरण की वृद्धि, औद्योगिक विकास के बाद हुआ है। अंग्रेजों ने हमारे यहां औद्योगिक क्रांति का सूत्रपात किया। इसके कारण विदेशी तथा स्थानीय धनीकों ने पूंजी का निवेश उद्योग और तकनीकी दोनों में किया। जिसका यह परिणाम हुआ यहां उद्यमशीलता का तेजी से विकास हुआ। अंजाम यह हुआ कि शहरों में मध्यम वर्ग का आविर्भाव हुआ और इधर गांव में भी इस तरह के एक नवीन वर्ग की उत्पत्ति हुई।"[8] अर्थात योगेंद्रसिंह का मानना था कि भारतीय समाज में मध्यवर्ग का उदय व्यापरीकरण की

वृद्धि और औद्योगिककरण के विकास के बाद हुआ है। अंग्रेजों ने इसका सूत्रपात किया जिसके कारण गांवों और शहरों पर इसका परिणाम हुआ।

"योगेंद्रसिंह का कहना है कि व्यापारी तथा औद्योगिक पूंजीवाद ने एक नई प्रक्रिया को जन्म दिया और यह प्रक्रिया आधुनिकीकरण की थी। आधुनिकीकरण ने मध्यम वर्ग के लोगों को विकास के नवीन अवसर दिए और इस प्रकार मध्यम वर्ग का औद्योगिक शहरों एवं गांवों मैं भी विकास हो गया।"[9] यहां योगेंद्रसिंह का कहना था कि व्यापारी तथा पूंजीवादियों ने नयी प्रक्रिया को जन्म दिया जिसके कारण मध्यवर्ग की संरचना का विकास होता रहा और मध्यवर्ग का विकास शेहरों और गांवों में भी देखा जाने लगा।

1.2 <u>अर्थ एवं परिभाषा</u>

'मध्यम वर्ग' आजादी के बाद का बहु प्रचलित शब्द है। मध्यम वर्ग के उदय के पीछे अर्थ की भूमिका रही है। आजादी के बाद मध्यम वर्ग में बहुत बदलाव आया हुआ दिखाई देता है। मध्यम वर्ग समाज का एक ऐसा भाग है जिसके अंतर्गत समाज के वह आर्थिक समूह आते हैं जो समाज के संगठन के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। इस वर्ग का स्थान शोषक और शोषित वर्गों के श्रेणी में आता है। मध्यवर्ग का अर्थ यह भी है कि

एक समूह जो समाज में अर्थव्यवस्था और सामाजिक स्थिति के कारण मध्यम स्तर पर स्थिर होता है। ऐसे वर्ग के मनुष्य न अमीर होते हैं और न गरीब। अतः यह वर्ग गरीब और आमिर के बीच में स्थानिक होता है।

'मध्यम' का शाब्दिक अर्थ है बीच वाला अर्थात वह वर्ग जो समाज के अन्य वर्गों के बीच में आता है। 'मध्य' यह शब्द भ्रामक है। मध्यवर्ग के लोगों को आर्थिक समस्या भी होती है किंतु वह अपना और अपने परिवार का पालन पोषण कर सकते हैं। मध्यम वर्ग एक इस प्रकार का वर्ग है जो अपने आप को समाज में अनेक आदर्शों एवं लक्ष्यों के साथ बंधकर रहता है; करण समाज में इसका संबंध अन्य दोनों वर्गों से जुड़ा रहता है। इस कारण मध्यम वर्ग के व्यक्तियों में दोनों प्रकार के लक्षण पाए जाते हैं।

मध्यमवर्ग समाज के अन्य वर्ग से अधिक सामाजिक और पारिवारिक होता है। मध्यवर्ग समाज के मर्यादाओं को बहुत अच्छी तरीके से निभाता है। इस वर्ग की सामाजिकता दूसरे वर्गों की तुलना में बहुत अधिक होती है। यह समय के साथ-साथ परिवर्तित होता रहता है और साथ ही इस वर्ग की आर्थिक स्थिति का भी परिवर्तन होता रहता है।

मध्यम वर्ग ऐसे कामकाजी व्यक्तियों का समूह है जो पैसेवाले नहीं होते हैं। किंतु आराम से जिंदगी बिताने के लिए काम करके पर्याप्त पैसे

कमाते हैं। मध्यम वर्ग इस प्रकार का वर्ग है जो समय के साथ-साथ और समाज के हिसाब से अपने आप को बदलता रहता है। यह वर्ग समाज के अन्य वर्गों की तुलना में बहुत बड़ा है और इसमें दोनों वर्गों के व्यक्ति समावेश होते रहते हैं।

मध्यवर्ग में भी और तीन वर्गों का समावेश होता है। उच्चमध्य वर्ग, मध्यम मध्यवर्ग, और निम्न मध्यवर्ग। मध्यवर्ग शब्द से यह जल्दी ज्ञात होता है कि यह वर्ग न अधिक धनी होता है और न ही अधिक गरीब। अलग-अलग देश में मध्यवर्ग का उद्भव और विकास और साथ ही उसका वर्तमान एक दूसरे से भिन्न-भिन्न सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थिति का परिणाम है। मध्यवर्ग केवल एक जैसे मनुष्यों का वर्ग नहीं है; इस वर्ग में आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से भिन्न सदस्य भी आते हैं।

मध्य वर्ग को विद्वानों ने आबध्द करते हुए मध्यवर्ग की विशेषता, दुर्बलता और उसकी सीमा का उल्लेख किया है।

- दि कम्पेक्ट एडिशन ऑफ़ ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार "मध्यमवर्ग समाज के उच्च और निम्न वर्ग के बीच का वर्ग है।"[10]
- चैंबर्स डिक्शनरी मैं मध्य वर्ग की परिभाषा इस प्रकार से है "मध्य वर्ग में वे सभी व्यक्ति आ जाते हैं जो अभिज्यात वर्ग और श्रमिक

वर्ग के मध्य होते हैं।"[11] अर्थात मध्यवर्ग में वे सभी लोग आते हैं जो अमीर और गरीब के बीच में होते हैं।

- समाज शास्त्रीय विश्वकोश के अनुसार "मध्यम श्रेणी के लोग बीच की स्थिति के होते हैं, जो ना बहुत धनी हो न ही बहुत निर्धन उसे मध्यवर्ग कहते हैं।"[12]अर्थात मध्यवर्ग न ही अमीर होता हैं और न ही गरीब इस कारण वह अन्य वर्गों के बीच की श्रेणी में आता हैं।
- डॉ. श्यामसुंदर घोष ने लिखा "यह वर्ग समाज के बीच का हिस्सा होता है, जो समाज को अनुप्रस्थ ढंग से विभाजित करता है और जिसमें कमोवेश कर एक ही रुतबे या ओहदे के लोग सम्मिलित होते हैं जिनकी विशेष आर्थिक और सामाजिक स्थिति एवं प्रवृत्ति होती है जो बहुधा उनकी आय, व्यवसाय, शिक्षा और वंश परंपरा से निर्धारित होती है।"[13] यहा डॉ. श्यामसुंदर जी कहते हैं कि मध्यवर्ग समाज का हिस्सा होने के कारण स्थान और सामाजिक स्थिति के आधार पर निर्धारित होता है।
- धनश्याम शाह का मानना है "मध्यवर्ग का स्थान श्रम और पूंजी दोनों के बीच में है।"[14] धनश्याम शाह ने सरल शब्दों में कहा हैं की मध्यवर्ग दोनों वर्गों के बीच का वर्ग हैं।
- आर.एच.ग्रेटन ने लिखा "मध्यवर्ग का नाम ही समाज के स्तर की ओर संकेत करता है। यह वर्ग आज भी मौजूद है और उसकी

अपनी विशिष्टताएं है। यह वर्ग अपनी विशिष्टताओं अथवा गुणों में इतना मिला-जुला है कि इस वर्ग को अन्य वर्ग के मध्य माना जाता है।"[15] यहा आर.ऐच.ग्रेटन कहते हैं कि मध्यवर्ग की अपने आप में विशेषता है और यह अपने गुणों में मिला-जुला होने के कारण अन्य वर्गों के बीच में आता है।

- गजानन माधव मुक्तिबोध ने लिखा "मध्य वर्ग की सांस्कृतिक चेतना, भारतीय प्राचीनता की गौरव भावना के नाम पर, सामंती संस्कार लिए हुए थे। उन संस्कारों को विभिन्न प्रकार से गौरव भी प्रदान किया, अर्थात उन संस्कारों के नए संस्करण भी हुए।"[16] अर्थात गजानन माधव मुक्तिबोध कहते हैं कि मध्यवर्ग के सभी वस्तुओं को सामंती लिए हुए थे और आगे जाकर उनके नए संस्करण आए।
- डॉ. सीमा गुप्ता ने लिखा "मध्यवर्ग इतना वृहत है कि कहीं वह उच्चवर्ग के निकट दिखाई देता है, कहीं वह निम्नवर्ग के साथ पर वस्तुतः इसकी स्थिति त्रिशंकु जैसी होती है। वंश, आय, शिक्षा, रहन-सहन, अभिरुचि, सामाजिक मर्यादा के अनुसार मध्यवर्ग समाज के अन्य वर्गों से अलग पहचाना जा सकता है। यह वर्ग आज भी शकुन अपशकुन, भाग्यवाद, कर्मवाद, पाप पुण्य, भक्ति पूजा, प्रेत, ज्योतिष आदि के बंधनों में जकड़ा हुआ है। यद्यपि मध्यम वर्ग समाजवादी प्रक्रिया को समाज के लिए आवश्यक

मानकर एक वर्ग हीन समाज की कल्पना करता है और संसार की अनेक क्रांतियां उसी के नेतृत्व में हुई है। फिर भी मध्यवर्गीय व्यक्ति परंपरागत रूढ़िवादिता, भाग्यवादी निष्क्रियता एवं धार्मिक अंधविश्वास की ओर झुकता है। यह वर्ग चाह कर भी धार्मिक रुढियों और अंधविश्वास को नहीं छोड़ पाता।"[17] यह डॉ. सीमा गुप्ता स्पष्ट रूप से मध्यवर्ग को परिभाषित करती है।

- डॉ. सरिता राय ने लिखा "जहां तक मध्यवर्ग का प्रश्न है वह पूंजीपति और मजदूर के बीच की कड़ी माना गया है। लेकिन आर्थिक उत्पादन में न यह उत्पादन साधनों का स्वामी होता है और ना किसी भौतिक मूल्य का उत्पादन करता है। अतः वह दफ्तरी कर्मचारी और बुद्धिजीवी के रूप में शासक वर्ग की आवश्यकता पूरी करता है।"[18] अर्थात यहां डॉ. सरिता राय कहती हैं कि मध्यवर्ग अन्य वर्ग का बीच वाला वर्ग हैं जो सीधे साधे काम कर अपने वर्ग की आवश्यकता पूरी करता हैं।
- दीपांकर गुप्ता स्पष्टता से मध्य वर्ग को परिभाषित नहीं करते हैं परंतु वे मध्यवर्ग को परिभाषा में अवश्य लिखना चाहते हैं। दीपांकर गुप्ता के अनुसार "वास्तव में न तो भारतीय और न पश्चिम मध्यवर्ग बीच में है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में वह वर्ग जो बेहतर जिंदगी बिताता है अपने आप को मध्यवर्ग कहता है और पश्चिम में तो मध्यम वर्ग का सामाजिक आधार इतना विस्तृत

है कि वहां की संपूर्ण जनसंख्या ही मध्यम वर्ग कहलाती है।"[19] दीपांकर गुप्ता कहते हैं की मध्यम वर्ग अन्य वर्गों के बीच का नहीं है, वह सिर्फ बेहतर काम करके अपनी जिंदगी बिता सकता है और सामाजिक आधार लेता है। वह अपने आप को मध्यम वर्ग कहलाते हैं।

- समाज शास्त्रीय विश्वकोश के अनुसार "मध्यम श्रेणी के लोग बीच की स्थिति के होते हैं, जो ना बहुत धनी हो न ही बहुत निर्धन उसे मध्यवर्ग कहते हैं।"[20] अर्थात मध्यवर्ग न ही अमीर होता हैं और न ही गरीब इस कारण वह अन्य वर्गों के बीच की श्रेणी में आता हैं।

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह ध्यान में आता है कि मध्यम वर्ग को किसी एक निश्चित रूप में व्यक्त नहीं कर सकते यह उचित नहीं होगा, करण मध्यवर्ग की अनेक धारणाएं हैं।

1.3 मध्यवर्ग : वर्गीकरण एवं परिस्थितियां

मध्यवर्ग को मुख्यतः तीन वर्गों में बांटकर देखा जाता है, उच्च मध्यवर्ग, मध्यम मध्यवर्ग, और निम्न मध्यवर्ग। समय के बदलाव के हिसाब से एक नया वर्ग भी जुड़ गया, वह है नव मध्यवर्ग। मध्यवर्ग का वर्गीकरण कुछ इस प्रकार है:-

1.3.1 उच्च मध्यवर्ग

इस वर्ग के अंतर्गत वह लोग आते हैं जिनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति बहुत अच्छी होती है। इस वर्ग के लोग अपने स्वभाव और आर्थिक स्थिति से अपने आप को उच्चवर्ग में गिनते हैं अतः उच्चवर्ग के लोगों की तरह व्यवहार करते हैं। इस वर्ग की सामाजिक स्थिति अन्य वर्गों से मजबूत होती हैं। यह वर्ग समाज के नज्ब को अन्य वर्गों से ज्यादा जल्दी समझ लेता हैं। मध्यवर्ग में से यह वर्ग समाज के सभी जानेमाने सरकारी कर्मचारियों के साथ अच्छे संबंध रखता हैं। उच्च मध्यवर्ग में पूंजीपति, ऊंची तनख्वाह पानी वाले आदि इस प्रकार के व्यक्ति इस वर्ग में आते हैं। यह वर्ग अपना जीवन सुखमय से बिताते हैं और इस वर्ग को कोई आर्थिक परेशानियां नहीं होती हैं।

1.3.2 मध्यम मध्यवर्ग

यह वर्ग समाज के उच्च मध्यवर्ग और निम्न मध्यवर्ग के बीच में आता है। यह वर्ग दूसरे वर्गों में होने वाले बदलाव की सूचना देता हैं। इस वर्ग की समाज में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं। राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन में मध्यम मध्यवर्ग ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं। इस वर्ग की संख्या सर्वाधिक हैं। इस वर्ग में व्यापारी, शिक्षित लोग आते हैं। इस

वर्ग के सदस्य अपने आप को और अपने परिवार को पाल सके इतना काम करते हैं और अपनी जिंदगी जीते हैं।

1.3.3 निम्न मध्यवर्ग

निम्न मध्यवर्ग के सदस्य मूलतः छोटे-मोटे काम करके अपना गुजारा करते हैं। यह वर्ग खराब स्थितियों में रहता है और अपना जीवन यापन करता है। इस वर्ग को ज्यादा आर्थिक समस्याएं आती रहती है। निम्न मध्यवर्ग के अंतर्गत छोटे-मोटे उद्योग धंधे करने वाले लोग आते हैं। यह वर्ग समाज में स्थापित निम्न वर्ग से थोड़ा ऊपर होता है। समाज में इस वर्ग के परिवारों में यह देखने मिलता है की कमानेवाला एक होता है तथा खानेवाले एक से अधिक। इस कारण इस वर्ग को आर्थिक समस्याएं अधिक होती हैं।

सुप्रसिद्ध उपन्यासकार यशपाल ने लिखा "मध्यम श्रेणी अनिश्चित स्थिति के लोगों की अद्भुत पंचमेल खिचड़ी है। कुछ लोग मोटरो और शानदार बंगलो का व्यवहार करते हैं और विनय से अपने आप को इस श्रेणी का बताते हैं। दूसरे लोग मजदूरों सी असहाय स्थिति में रहकर भी केवल सफेदपोश और शिक्षित होने के बल पर इस श्रेणी का अंग होने का दावा करते हैं।"[21] यहां उपन्यासकार यशपाल जी कहते हैं की मध्यवर्ग में ज्यादा सामान्य व्यक्तियों को देखा जा सकता है। कुछ लोगों के पास

सभी सुविधाएं होती है किंतु वह अपने आप को मध्यवर्ग में स्थानित करते हैं। कुछ लोग असहाय स्थिति में रहकर सफेदपोश और शिक्षित होने पर अपने आप को मध्यवर्ग का हिस्सा बताते हैं। इस कारण ही मध्यवर्ग को भी तीन भागों में बांटा गया। उच्च मध्यवर्ग, मध्यम मध्यवर्ग, और निम्न मध्यवर्ग।

1.3.4 <u>नव मध्यवर्ग</u>

आजादी के बाद समाज के मध्यवर्ग में बहुत बदलाव आया था। अतः मध्यम वर्ग ने समाज में उपस्थित अन्य वर्गों की तुलना में ज्यादा परिवर्तन किया है। नव मध्यवर्ग की मानसिकता में जिस प्रकार के विस्तार को पाया जाता है वह पहले के मध्यवर्ग से मेल नहीं खाता। वर्तमान समय में इस वर्ग का व्यक्ति इस मानसिकता का शिकार हो गया है; जिसका विरोध राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के दौरान किया गया था।

इस वर्ग की सामाजिक स्थिति बदली नहीं है। नव मध्यम वर्ग आधुनिक समाजवादी शक्तियों के चपेट में इस प्रकार से फंसा हुआ है कि वह संपूर्णता से समाज को देखना नहीं चाहता। नव मध्यवर्ग के लोग शिक्षित एवं बहुत बड़े लक्ष्यों को लेकर चलते हैं।

1.3.5 आर्थिक स्थिति

अर्थ का महत्व हर एक दौर के लिए विशेष होता है। अर्थ के कारण ही समाज में कोई भी व्यक्ति धनवान तथा निर्धन हो सकता है। अर्थ समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है जिसके कारण समाज के लोग अपनी-अपनी सामाजिक स्थिति को निर्धारित करते हैं। आर्थिक दृष्टिकोण के माध्यम से मध्यम वर्ग समाज का एक ऐसा समूह है जो न धनवान है और न निर्धन होता है।

मध्यम वर्ग समाज के व्यक्ति 'अर्थ' को बहुत अहमियत देता है। आर्थिक स्थिति से मध्यम वर्ग को तीन भागों में बाटा गया है। उसका वर्गीकरण उच्च मध्यवर्ग, मध्यम मध्यवर्ग और निम्न मध्यवर्ग इस प्रकार से किया गया है।

1.3.6 सामाजिक स्थिति

मध्यम वर्ग की सामाजिक स्थिति उसके आर्थिक स्थिति के हिसाब से परखी जाती है। यह वर्ग समाज के अन्य वर्गों से ज्यादा सामाजिक एवं पारिवारिक होता है। यह वर्ग समाज के सारी मर्यादा को बहुत अच्छे से निभाता है। मध्यम वर्ग अपने से ज्यादा समाज के बारे में सोचता है;

अतः इस वर्ग को समाज में बदनामी का डर लगा रहता है। समाज में मध्यवर्ग सामाजिक प्रतिष्ठा को अपना सब कुछ समझता है और उसकी रक्षा करने की पूरी तरह से कोशिश करता है।

1.3.7 पारिवारिक स्थिति

समाज में मध्यवर्गीय परिवारों में समस्याएं होती रहती है। यह वर्ग जिन समस्याओं का सामना करता है वह परेशानियां समयवध्द नहीं है और न ही वर्तमान परिस्थितियों में नजर आती हैं। समाज में मध्यवर्ग के परिवारों में पारिवारिक तनाव एवं समस्याएं शुरू से रही है और सदा रहेगी। परिवारों में बेरोजगारी, महंगाई, मकानों की कमी, महंगी शिक्षा, विवाह आदि जैसी समस्याएं होती रहती है और यह परेशानियां सरकार से संबंधित नहीं होती है।

1.3.8 राजनैतिक स्थिति

मध्यवर्ग एक ऐसा वर्ग है जिसे हर एक परेशानियों से गुजरना पड़ता है। मध्यवर्ग पर राजनीति के कारण बहुत शोषण होते रहते है। राजनेताओं के झूठे आश्वासनों और उनके अन्य भ्रष्टाचार जैसे कुरीतियों के कारण बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। एक प्रकार

से राजनीति के कारण ही मध्यवर्ग को आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

अतः देख सकते है कि मध्यवर्ग का आगमन भारत में आजादी के बाद हुआ और उसे मुख्यतः तीन प्रमुख्य वर्गों में बाटा गया। मध्यवर्ग द्वारा सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और पारिवारिक समस्याओं का सामना किया जाता है।

संदर्भ सूची

1) वोहरा वंदना, सामाजिक स्तरीकरण तथा परिवर्तन, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2015, पृ. 35

2) वहीं, पृ. 35

3) वहीं, पृ. 36

4) वहीं, पृ. 36

5) भिसे (डॉ) रामचंद्रा मुंजाजी, भारतीय समाज एवं महिला सशक्तिकरण, विद्या प्रकाशन, कानपुर 2013, पृ. 15

6) वहीं, पृ. 15

7) वहीं, पृ. 15

8) वहीं, पृ. 31

9) वहीं, पृ. 32

10) जावेद अस्मा, प्रेमचंद के उपन्यास में मध्यवर्ग : दशा और दिशा, अलीगढ़, 2012, पृ. 28

11) वहीं, पृ. 28

12) त्रिपाठी शंभुरत्न (संपादक), समाजशास्त्रीय विश्वकोष, समाज विज्ञान, किताबघर, पृ. 48

13) घोष (डॉ) श्यामसुंदर, भारतीय मध्यवर्ग, लोकभरती प्रकाशन, 1960, पृ. 02

14) भिसे (डॉ) रामचंद्रा मुंजाजी, भारतीय समाज एवं महिला सशक्तिकरण, विद्या प्रकाशन, कानपुर, 2013 पृ. 27

15) ग्रेटन. आर. एच, दि इंग्लिश मिडल क्लास, पृ. 01

16) मुक्तिबोध गजानन माधव, कामायनी : एक पुनर्विचार, राजकमल प्रकाशन, 1997, पृ. 43

17) गुप्ता सीमा, समकालीन हिन्दी उपन्यास : महानगरीय बोध, जयपुर, पृ. 152

18) राय (डॉ) सरिता, उपन्यासकार प्रेमचंद की सामाजिक चिंता, वाणी प्रकाशन, 1996, पृ. 126

19) भिसे (डॉ) रामचंद्रा मुंजाजी, भारतीय समाज एवं महिला सशक्तिकरण, विद्या प्रकाशन, कानपुर, 2013, पृ. 27, 28

20) त्रिपाठी शंभुरत्न (संपादक), समाजशास्त्रीय विश्वकोष, समाजविज्ञान, किताबघर, 1960, पृ. 48

21) यशपाल, दादा कॉमरेड, लोकभरती प्रकाशन, 1997, पृ. 20

समकालीन कविता का परिदृश्य

2.1 समकालीन कविता : स्वरूप एवं परिभाषा

समकालीन कविता का उदय 1960 के आसपास माना जाता है। समकालीन कविता आधुनिक कविता के विकास के बाद की सूचक काव्यधारा है। समकालीन कविता हिंदी साहित्य में जनवादी मूल्यों, संपूर्ण यथार्थ के प्रश्नों के साथ नजर आती है। समकालीनता हर एक युग की अपनी है। समकालीन काल एक जनचेतना काल है। इस काल के कव्यों में साधारण रुप से सामाजिक, राजनीति, आर्थिक, सांस्कृतिक, आदि अहम् परेशानियां नजर आती है।

समकालीन का शाब्दिक अर्थ है वर्तमान समय में होनेवाला या वर्तमान समय में जो भी लिखा जाता है उसे समकालीन कहते है। समकालीन कविता में यथार्थ बखुबी से नज़र आता है। कुछ आलोचकों का कहना है कि "साठोत्तरी कविता का दूसरा नाम ही समकालीन है।"[1] समकालीन अपने समय यानी वर्तमान समय के साथ चलती है। इस दौर की कविताएं वर्तमान समय की विसंगति, समाज की विडंबना और तनाव से जुड़े प्रश्नों से रुबरु होती है। समकालीन कविता की आधार भूमि यूग परिवेश और जीवन के साथ जुड़े हुए विवशतापूर्ण सवाल सामने लाती है।

समकालीन कविता नयी कविता के बाद की कविता है और इसे 'विद्रोही कविता' भी कहा जाता है, क्योंकि इस समय में हर एक परेशानियों का विद्रोह किया जाता था। यह कविता समाज के सभी विडंबना और अन्य संपूर्ण यथार्थ को सामने लाती है। समकालीन कविताएं कल्पना का आधार लेकर लिखी नहीं जाती। मूलतः यह कविता आसपास के परिवेश, गहरे विचार, दबाव, तनाव से विवश होकर लिखी जाती है।

केदारनाथ सिंह समकालीन कविता के बारे में यह कहते हैं कि "कविता क्रांति ले आएगी ऐसे खुशफहमी मैंने कभी नहीं पाली, क्योंकि क्रांति एक संगठित प्रयास का परिणाम होती है जो कविता के दायरे के बाहर की चीज है। इसलिए बेहतर होगा कि हम कविता से वही मांग करे जो वह दे सकती है। मेरी मान्यता है कि अच्छी कविता के उपयुक्त वातावरण बनाने में सैकड़ों राजनीतिक प्रस्तावों से कहीं ज्यादा काम करती है। कविता यही कर सकती है"[2] रचनाकार का यह कथन बहुत समकालीन कवियों के विचारों को सूचित कराता है।

समकालीन कविताओं में वर्तमान समय में जो हो रहा है उसका सीधा खुलासा किया जाता है। इन कविताओं का मूल उद्देश्य हिंसा और युद्ध विरोध रहा है, और इन उद्देश्यों को लेकर लोकतंत्र के स्तंभ को मजबूत बनाती है। समकालीन कवियों ने उन सवालों को महत्व दिया है जो सामाजिक परिवेश पर आधारित होते हैं, जो वर्तमान में प्रासंगिक है।

यह कविता एक ऐसी कविता है जहां कवि समाज को अपने काव्य के माध्यम से वर्तमान समस्या से निकट लाता है। समकालीन कविता मोहभंग की कविता है जहां काव्य के माध्यम से यथार्थ को सामने लाया जाता है जिससे वर्तमान समय की कुरीतियों के बारे में जान पाते हैं। समकालीन कविताओं में प्रासंगिक समस्या का उल्लेख किया जाता है, और इनमें व्यंग्य मिलना अनिवार्य है।

साहित्य में समकालीन कविता वह कविता है, जो एक युग विशेष में एक जैसे घटनाओं का द्योतन करती है। कविताओं की यह घटनाएं बहुत व्यापक है। समकालीन कविता अपने समाज, युग, परिवेश, प्रकृति, ऐतिहासिकता, राजनीति के साथ मानव के सामने प्रासंगिक मुद्दों को अभिव्यक्त करती है। "समकालीन शब्द कालवाची नहीं है, अपितु उसका विशेष में घटित घटनाक्रमों के साथ-साथ प्रचलित कथ्य एवं रचना शिल्प को ध्वनित करता है।"[3]

अतः समकालीन एक निश्चित समय नहीं है। यह अपने समय के साथ समांतर चलती रहती है।

<u>परिभाषा</u>

- समकालीन की परिभाषा हिंदी शब्द तंत्र के अनुसार "जो एक समय में हुए हो।"[4] अर्थात समकालीन का मतलब जो वर्तमान या एक समय का होता है।

- वर्धा हिंदी शब्दकोश के अनुसार समकालीन शब्द "वर्तमान काल का; एक ही समय का हैं"[5] इस प्रकार से समकालीन की परिभाषा दी गई है अर्थात वर्तमान दौर में होना ही समकालीनता है।
- विक्षनरी के अनुसार समकालीन की परिभाषा कुछ इस प्रकार से हैं "जो एक ही समय में हो। एक ही समय में होनेवाले।"[6] अर्थात जो एक ही परिवेश से होते हैं उसे समकालीन कहा जाता है।
- हिंदी शब्द सिंधु के अनुसार "जो दो या अनेक (व्यक्तित्व, घटना, सत्ता) एक ही समय में हो, जो उत्पत्ति, स्थिति आदि की समकालीन दृष्टि से एक ही समय के हों।"[7] अर्थात समकालीन का मतलब वर्तमान समय का होता है।
- यू (डॉ°) श्रीकला के अनुसार "समकालीन शब्द अपने समय के संबंध बातों को सूचित करता है। वस्तुतः समकालीनता का मतलब यह है कि अपने समय के वास्तविक जीवन से निकट एवं महत्वपूर्ण समस्याओं और देशकाल स्थितियों को चित्रित करना।"[8] यहां यू. (डॉ°) श्रीकला कहती है समकालीनता का अर्थ ही वर्तमान समय के स्थितियों को दर्शाना है।
- ब्रजमोहन शर्मा के अनुसार "कविता न कोरा दर्शन है और न केवल मात्र आवेगजन्य विद्रोह, बल्कि यह समकालीन स्थितियों का कलात्मक आलेखन है। उसकी जीवंतता, वैचारिक बोध,

प्रतिबद्धता-अप्रतिबद्धता, वर्ग विषमता, विसंगतियों विद्रुपताओ के कलात्मक प्रतिफलन में है। जिस कविता में समकालीन जीवन की गंध हो, शोषित, प्रताड़ितों की व्यथा अंतर्निहित हो और शाश्वत मूल्य की सांकेतिक अभिव्यक्ति हो, वही शाश्वत एवं चिरंतन कृति होती है।"[9] यहा ब्रजमोहन शर्मा के कहने का अर्थ है कि समकालीन कविता कलात्मक आलेख है जिसके माध्यम से विचार व्यक्त किया जाता है, और साथ ही वह एक शाश्वत एवं चिरंतन कृति है।

- आलोचक सुवास कुमार ने समकालीनता के विषय में सटीक और सार्थक विचार प्रकट किया है "समय के व्यापक परिप्रेक्ष्य में वर्तमान की बहूआयामी समझ का होना, वर्तमान की समस्याओं का सामाजिक रुप से साक्षात्कार करना, व्यापक जल समुदाय की आशा-आकांशा के प्रति दायित्व और प्रतिबद्धता महसूस करना समकालीन बनना है।"[10] कहने का अर्थ यह है कि वर्तमान समय की समझ होना, समस्याओं को जानना और वर्तमान परिवेश को महसूस करना ही समकालीनता है।
- विश्वंभरनाथ उपाध्याय के अनुसार "समकालीन कविता में जो हो रहा है 'बिकमिंग' का सीधा खुलासा है। इसे पढ़कर वर्तमान काल का बोध हो सकता है, क्योंकि उसमें जीते, संघर्ष करते, लड़ते, तड़पते, गरजते तथा ठोकर खाकर सोचते वास्तविक आदमी का

परिदृश्य है।"[11] अर्थात समकालीन कविता वर्तमान का खुलासा करती है, और इसे पड़ने के बाद वास्तविकता का ज्ञात होता है।

- विश्वंभरनाथ उपाध्याय का यह भी कहना हैं कि "समकाल शब्द यह बताता है कि काल के इस प्रचलित खंड या प्रवाह में मनुष्य की स्थिति क्या है, इसे उलटकर कहे तो कह सकते है कि मनुष्य की वास्तविक स्थिति को देखकर उसे अंकित, चित्रित करके ही हम समकालीनता की अवधारणा को समझ सकते हैं।"[12] विश्वंभरनाथ के अनुसार समकालीन वास्तविकता को देखकर उसे चित्रित करता है।
- समकालीन कविता को परिभाषित करते हुए नरेंद्र मोहन के अनुसार "समकालीनता का अर्थ किसी कालखंड या दौर में व्याप्त स्थितियों और समस्याओं का चित्रण भर नहीं है, बल्कि उन्हें ऐतिहासिक अर्थ में समझना, उनके मूल स्रोत तक पहुँचना और निर्णय ले सकने का विवेक अर्जित करना समकालीनता तत्कालीनता नहीं हैं।"[13] यहा नरेंद्र मोहन जी कहते है कि समकालीनता समस्याओं का चित्रण करने तक नहीं है।
- गंगाप्रसाद विमल समकालीन को प्रासंगिकता के साथ जोड़ते हैं और कहते हैं कि "समकालीन का अर्थ यह नहीं हैं कि दो व्यक्ति एक विशेष कालखंड में जी रहे हो और संयोग से वे रचनाशील भी हैं। जिस समकालीनता की बात की जा रही है उसका शब्दार्थ

की धारणा से संबंध नहीं है, अपितु वह जीवन बोध के आधार पर समानधर्मी रचनाकारों के बोध की समानधर्मिता हैं।"[14] यहा गंगाप्रसाद विमल जी कहते है कि समकालीनता किसी दो व्यक्ति के विशेष कालखंड नहीं है बल्कि वह रचनाकारों के बोध का समानधर्मिता हैं।

- सुप्रसिद्ध आलोचक रोहिताश्व के अनुसार "समकालीनता एक काल में साथ-साथ जीना नहीं है। समकालीनता अपने काल की समस्याओं और चुनौतियों का मुकाबला करना है। समस्या और चुनौतियों में भी केंद्रीय महत्व रखने वाली समस्याओं की समझ से समकालीनता उत्पन्न होती है।"[15] आलोचक रोहितश्व का कहना है कि अपने समय की चुनौतियों और समस्याओं का मुक़ाबला करना ही समकालीनता है।
- जीवन सिंह का कथन हैं कि "समकालीनता को जानने के लिए देशकाल के भीतर निर्मित सम्पूर्ण व्यवस्था की प्रकृति को समझना भी जरूरी है, जो वर्गीय संस्कारों और स्वार्थ बद्धताओं के द्वंद्व एवं संघर्ष से परिचित रहती है। इसलिए जब कोई रचनाकार अपने समय की बाहरी समस्याओं के परिणाम रूप में उसकी आभ्यांतरी कृत स्थितियों के सच को जानने के उद्देश्य से उनमें गहरे पैठता है तो वह समकालीनता का अनिवार्य हिस्सा होता है।"[16] यहा

जीवन सिंह कहते हैं कि समकालीनता को जानने के लिए देशकाल की सम्पूर्ण व्यवस्था को समझना जरूरी है।

- प्रसिद्ध कवि राजेश जोशी अपने शब्दों में कहते हैं कि "समकालीनता न तो प्रवृति के आधार बनाई गई श्रेणी है न विचारधारात्मक श्रेणी। यह तो एक ऐसी सराय है जिसमें कोई भी अपना बिस्तर डालकर रह सकता है।"[17] यहां कवि राजेश जोशी समकालीनता का अर्थ बताते हुए कहते है कि समकालीनता में कोई भी आ सकता है।
- समकालीन कविता के प्रसिद्ध कवि धूमिल के अनुसार "समकालीनता क्या है? रूप, रंग और अर्थ के स्तर पर आजाद रहने की, सामने बैठे आदमी की गिरफ्त में न आने की एक तड़प, एक आवश्यक और समझदार इच्छा, जो आदमी को आदमी से जोड़ती है मगर आदमी को आदमी की जेब में या जूते में नहीं डालती।"[18] यह धूमिल कहते है कि समकालीनता मनुष्य को मनुष्य के साथ जोड़कर रखती है, किन्तु मनुष्य के पैरों तले नहीं रखती है।
- हिन्दी कविता के मशहूर कवि रघुवीर सहाय ने समकालीन को परिभाषित करते हुए कहा है "मेरी दृष्टि में समकालीनता मानव भविष्य के प्रति पक्षधरता का दूसरा नाम है।"[19]

- कवि नन्दकिशोर नवल का मत है कि "कविता में समकालीनता की पहचान वही नहीं हो सकती जो उदाहरण के लिए राजनीति में हो सकती है। सही पहचान के लिए हमें कवि की भाषा और उसके भावबोध के परस्पर संबंध को जाँचना चाहिएँ।"[20] नंदकिशोर के अनुसार समकालीनता की पहचान रचनाकार के भाषा और उसके भावबोध से होती है।
- सत्यप्रकाश मिश्र के अनुसार "समकालीनता एक गहरा अर्थ अपने समय का निष्पक्ष, ईमानदार और न्यायिक विश्लेषण सिद्ध होता है। ऐसी स्थिति में भी समकालीनता शब्द विशेषण के रुप में फैशनपरस्त, चालू और सामयिक से भिन्न अर्थ रखता है। इस अर्थ में समकालीन कवि या रचनाकार वही हो सकता है जिसे अपने समय का प्रत्यभिज्ञान हो जो उसे ईमानदारी और निष्पक्षता के साथ परिभाषित कर सकता हो या कर रहा हो, प्रवाह में बह नहीं रहा हो बल्कि प्रवाह के विरुद्ध चौकन्ना हो। वह चौकन्नापन ही समकालीनता का लक्षण है। इस दृष्टि से समकालीनता चालू मुहावरा या रुढ़ि की स्वीकृति नहीं है, इसकी विवेकपूर्ण अस्वीकृति है।"[21] सत्यप्रकाश मिश्र कहते है कि समकालीन वह हैं जिसे वर्तमान समय का ज्ञात हो और ईमानदारी के साथ परिभाषित करता हो।

- आनंदप्रकाश दीक्षित के अनुसार "समकालीनता, मेरे लिए मात्र कालबोध के लिए प्रयुक्त की जाने वाली एक भाववाचक संज्ञा ही नहीं है बल्कि सर्जना के धरातल पर मैं उसे जीवंतता प्रदान करने वाली एक शक्ति और सर्जक के लिए एक ऐसा उपयोगी तत्व, जो उसकी कृति को नवीनता प्रदान करके ग्रहीता को उस कृति के निकट लाने और उससे आत्मीय भाव से जुड़ जाने का संबल प्रदान करता है, मानता हूँ।"[22]
- सुप्रसिद्ध कवि, आलोचक अरुण कमल का कहना हैं कि "किसी भी कृति की रचना एक चुने हुए कालक्ष्ण में ही संभव है सिद्ध कराता हैं कि प्रत्येक रचना अपने काल से बद्ध है। यह उसकी समकालीनता हैं। और यह समकालीनता उस रचना में व्यक्त उस काल के जीवन का अनुपाठन है जो मनुष्य के जीवन में उसके पहले कभी प्रकट ही नहीं हुआ था। जीवन लगातार बदल रहा है। नदी का पानी बदल रहा है और नदी के पानी में भीगता हुआ हाथ भी निरंतर बदल रहा है। एक श्रेष्ठ रचना उन तत्वों को पकड़ती हैं जो सर्वाधिक नये और अनूठे हैं। जो रचना जितनी तीव्रता और जितने विस्तार से इस नयेपन को व्यक्त करती है, वह उतनी ही श्रेष्ठ होती है और उतनी ही अधिक समकालीन। मनुष्य को बाह्य तथा आंतरिक जगत, सूक्ष्म मनोभाओं, रागों, भावात्मक घात-प्रतिघातों और उसके होने मात्र में जो सर्वथा नया

है, और इसलिए जो आजतक किसी पूर्ववर्ती रचना की पहुँच के बाहर भी उसे ही एक रचना ढूँढती और व्यक्त करती है। इस अर्थ में वह सर्वथा काल-बद्ध और समकालीन है।"[23] यहां आलोचक अरुण कमल समकालीनता का अर्थ विस्तार से बताते है।

- देवीशंकर अवस्थी के अनुसार "समकालीनता समय की कोई इकाई नहीं है, वस्तुतः वह 'रुख' है जो तमाम समसामयिक जीवन की प्रक्रियाओं के प्रति हमें उन्मुख रखता है।"[24] अर्थात समकालीनता कोई इकाई नहीं है बल्कि वह एक जीवन हैं जो हमे सभी के तरफ रूबरू करता है।

2.2 समकालीन कविता की प्रवृत्तियां

समकालीन कविता में मानव स्थिति की समझ काफी गहरी होती गई है। समकालीन कविता वह कविता है जो वर्तमान समय में निर्मित वास्तविकता, उनसे उत्पन्न समस्याएं साथ ही मानव संबंध में आए परेशानियों को बेरुखी से चित्रित करती हैं। समकालीन दौर समाज का आईना है जो समाज के यथार्थ को सामान्य जन के सामने लाता है। समकालीन कविता की प्रचलित मुख्य प्रवृत्तियों को निम्न बिंदुओं के माध्यम से जाना जा सकता है।

2.2.1 रोमानी संस्कारों से मुक्त

समकालीन कविता में जो मुख्य प्रवृत्ति सामने आई है वह रोमानी संस्कारों से मुक्त है। इस दौर में रोमांच का आधार न लेते हुए कविताएं रची गई। समकालीन दौर के कवियों ने रोमांच के दरवाजे को बंद कर दिए जहां रोमानी काव्य लिखे जाते थे जो छायावादी परंपरा में थे। समकालीन कवियों ने रोमानी संस्कारों से मुक्त होकर अपनी कविताओं की रचना की जहां यथार्थ सामने आता हो और किसी मनुष्य को मोह न हो।

"मैं छाता लेकर काम पर जाता हूँ।

बहुत तेज धूप है

बरसात के लिए बादल नहीं

छाया के लिए भी बादल नहीं

धूप से बचने के लिए

मैं छाता लेकर काम से जाता हूँ।"[25]....(छाता लेकर काम पर)

2.2.2 मोहभंग की स्थिति

समकालीन काव्य मोहभंग का दौर है। इन कविताओं में कठिन जिंदगी और संबंधों की खींच खरोच व्यक्त होती है। समकालीन कवि समाज

का मोहभंग करने हेतु काव्य लिखने लगे थे। इस दौर में जीवन से सीधा साक्षात्कार काव्य के माध्यम से होने लगा और मोह के दरवाजे बंद होने लगे।

"घर से निकालने की गड़बड़ी में

इतना बहार निकाल आया

की सब जगह घुसपैठिया होने की सीमा थी।

घुसपैठिया कि देशीहा!!"[26]....(घर से बहार निकालने कि गादबाड़ी में)

2.2.3 <u>जीवन से सीधा साक्षात्कार</u>

इस दौर के कविताओं में जीवन से सीधा साक्षात्कार देखने को मिलता है। समकालीन काल के कविताओं में उत्तेजना, असंतोष, निराशा, दबाव, तनाव, कड़वाहट का स्वर अधिक दिखाई देता है। आज के रचनाकार जब मानव को दुहरी जिंदगी जीते हुए देखता है, इस कारण कवी अपने काव्य के माध्यम से परिवेश का सही और कठोर सत्य सामने लाता है। यहां जीवन का सीधा साक्षात्कार है जिसमें कोई झूठ या दोगलापन नहीं होता। यहाँ जीवन के कटु सत्य सामने लाए जाते है। समकालीन कविता का यह उद्देश रहा है कि वह समाज के लोगों को सदैव सत्य दिखाए।

"मेरे पेट में मेरा दिमाग

मेरे पेट में

अकेला में गर्भस्थ।

अपने पेट में

अपनी ही झूठन खाकर

बढ़ रहा हूँ

मैं"[27]....(मेरे पेट में मेरा दिमाग)

2.2.4 <u>सामाजिक यथार्थ</u>

समकालीन कविता की आधार भूमि सामाजिक यथार्थ है। इन कविताओं में युगीन यथार्थ या वास्तविकता को अभिव्यक्त किया जाता है। आसान भाषा में आज की कविताओं में मानवीय और सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्त किया जाता है। इस दौर के कवी अपनी कविताओं में वर्तमान समय की चुनौतियों को निकाल कर सत्य को ग्रहण करने का यथार्थवादी नजरिया अपनाते है। समकालीन कविताओं में सामाजिक यथार्थ केवल कल्पना सोच का आडंबर का उपज नहीं है, बल्कि वह व्यवहारिक जीवन

का सत्य का उपज है। समकालीन रचनाकार अपनी रचना में समाज का कटु सत्य, संघर्षशील जीवन, सामने लाता है।

"न मैं कौआ हूँ

न मेरी चोंच है-

आख़िर किस नाक-नक़्शे का आदमी हूँ

जो अपना हिस्सा छिन नहीं पाता!!"[28]....(मैं दीवाल कि ऊपर)

2.2.5 राजनीतिक चेतना

भारत के राजनीति का परिदृश्य समकालीन कविताओं में देखा जा सकता है। प्राचीन काल से ही हिंदी में अधिक संख्या में राजनीतिक काव्य रचे जाते थे। यह कविताएं राजनीतिक व्यवस्था का विरोध करने के लिए लिखी जाती थी। समकालीन दौर के कवि अपने-अपने ढंग से अपने समय की राजनीति को समझकर अपने काव्य में लिखने का प्रयास करते हैं। समकालीन कविता में राजनीति एक धारणा नहीं बल्कि एक अनुभव है। यह कविताएं अमानवीयता के विरुद्ध और मानवीय जीवन के पक्ष में खड़ी होती है। इन कविताओं के माध्यम से कवियों ने राजनीति के भ्रष्टाचार को समाज के सामने लाया है।

"दिन मेरे कमरे का मुखौटा लगाकर आता था।

और शहर घूमता था।

उभरे गड्ढे कि तरह कमरे में

दरवाजा बंद कर धँस गए।

जबकि मेरा स्वतंत्र देश

एक पक्षी था जो पिंजड़े सहित पेड़ पर जाकर बैठ गया

था।"[29]....(बिस्तर भूल गया था)

2.2.6 <u>आक्रोश एवं विद्रोह का स्वर</u>

समकालीन कविताओं में आक्रोश और विद्रोह का स्वर उभरकर आने लगा। इन कविताओं में मानव का अमानवीय स्थितियों के विरुद्ध आक्रोश और विद्रोह करता नजर आता है। देखा जाए तो समकालीन काव्य रचनाकार की विद्रोह की कविता है। जिन्होंने समाज और राजनीति का यथार्थ का सीधा सामना किया। इन कविताओं में वास्तविक रुप से वह कविता आती है जिसमें सामान्य मनुष्य का आक्रोश, विद्रोह, तनाव, दबाव की प्रधानता होती है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो समकालीन रचनाकारों में सामाजिक और राजनीतिक कुरीतियों के प्रति आक्रोश और

विद्रोह की भावना दिखाई देती है, और वह अपने काव्य के माध्यम से आक्रोश और विद्रोह की भावना समाज के लोग में भी जगाते हैं।

"तथा माँ-बहिन की गाली से जन्मे लड़के ने

लाइन से बहार आकर

जुलूस वालों को माँ-बहिन की गाली दी"[30]....(तथा)

2.2.7 <u>तीखे व्यंग्य की प्रधानता</u>

वर्तमान समय में जो स्वार्थ, भ्रष्टाचार, आपाधापी और दोगलापन व्याप्त हैं, उसे अनुभव के दायरे में बांधकर समकालीन रचनाकार ने अपनी कविताओं में ऐसे व्यंग किए हैं जिसके कारण एक-एक कुरीतियों का पर्दाफाश होने लगा। व्यंग्यात्मक काव्य नयी कविता के दौर में ही शुरु हो गया था, किंतु वहां व्यंग साधारण था, समकालीन दौर में आकर व्यंग तीखा और कटु हो गया। तीखे व्यंग के माध्यम से ही जगत की कुरीतियां कवि अपनी कविताओं में दर्शाने लगे।

"और लहर का चेहरा नदी से मिलता-जुलता है।

पानी से भरी बाल्टी का चेहरा नदी से मिलता-जुलता है।

संसद के कंघी के आकार के होने की प्रक्रिया

सरकार से सिर पर बाल नहीं थे।"[31]....(राजनैतिक बहस में सूखे को लेकर)

2.2.8 आशावादी स्वर

समकालीन काव्य की विशेष प्रवृत्ति यह है कि जीवन की संपूर्ण कठिनाइयों के होने के बावजूद यह पलायन का रास्ता अपनाती नहीं है। बल्कि उसमें आकांक्षा और उम्मीद रहती है। यह कविताएं सामान्य जन को आशा देती है। जहां एक व्यक्ति सब कुछ छोड़ छाड़ कर अकेला बैठा उन्हें आशा का भाव प्रधान करता है।

"कृतज्ञ होकर

सबसे बड़ा डॉक्टर सबसे गरीब आदमी का इलाज करे

और फीस मांगने से डरे।"[32]....(सबसे गरीब आदमी की)

2.2.9 आम आदमी के दुख दर्द की अभिव्यक्ति

समकालीन कविता आम आदमी को गहराई से जानकर उसके दुख-दर्द को अभिव्यक्त करती है। यह काव्य आम मनुष्य की आंतरिक द्वंद्व, उसकी पीडा, विवशता के कटु अनुभवों के साथ दर्शाती है। मूलतः

समकालीन कविता का केंद्रीय चरित्र आम आदमी रहा है। इस दौर के कवियों ने शोषण चक्र में बंधे, जिम्मेदारियों के बोझ के तले दबते, टूटते हुए आम जनता के दुख दर्द को अपने काव्य में अभिव्यक्त किया है। समकालीन काव्य आम जनता एवं मध्यवर्गीय समाज से जुड़े हुए कवियों की कविता हैं। जीवन के इस संघर्ष में आम आदमी महंगाई में और परिवार की चिंता में डूबा हुआ है फिर भी वह अपने संस्कृति और मूल्यों की रक्षा करने हेतु जागरुक है।

"हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था

व्यक्ति को मैं नहीं जनता था

हताशा को जनता था

इसलिए मैं उस व्यक्ति के पास गया"[33]....(हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था)

2.2.10 काव्य में प्रकृति चित्रण

कवि के लिए हमेशा प्रकृति प्रेरणा का स्रोत ही नहीं बल्कि सौंदर्य का भंडार भी रही है। प्रकृति की शुद्धता में मनमोहक प्रतीत होता है इसका चित्रण अनेक कवि के कविताओं में मिलता है। किन्तु मनुष्यों द्वारा किया प्रदूषण प्रकृति का विनाश करती है। इसी कारण वर्तमान दौर के

कवि प्रकृति की सुरक्षा के लिए अपनी कविता के माध्यम से प्रकृति की ओर अपनी संवेदनशीलता प्रकट करते हैं।

"अंदर की दुनिया में

अंदर का जंगल

जड़ ही जड़

जड़ों का जंगल

निकली जड़े जड़ों से

उनसे भी निकली बस जड़।"[34]....(पेड़ के नीचे बैठना)

2.2.11 काव्य की शिल्पगत वैशिष्ट्य

समकालीन कविताओं में कलात्मकता के साथ सपाटबयानी एवं सामान्यीकरण को भी स्थान मिला है। कठिन भाषा का प्रयोग किए बिना आसान भाषा में अपनी कवितायें रची गयी। समकालीन कविता में गद्यात्मक रूप को प्रधानता दी गयी। साथ ही इस दौर की कविता में प्रबंध काव्य की जगह लंबी और छोटी कविताओं को स्थान दिया गया। समकालीन कविता की भाषा नुकीली, व्यंग्यात्मक, सरलता में सम्पन्न और सीधी वार करनेवाली हैं। इन कविताओं में मुहावरों और लोकोक्तियों

का प्रयोग किया गया। साथ ही बिंबों, प्रतिकों, मिथकों का भी प्रयोग किया जाने लगा। समकालीन कवियों ने अपने लेखनी में बहुत शिल्पगत का प्रयोग किया।

कुल मिलकर यह कह सकते हैं कि समकालीन कविता में 'रोमानी संस्कारों से मुक्त', 'मोहभंग कि स्थिति', 'जीवन से सीधा साक्षात्कार', 'सामाजिक यथार्थ', 'राजनीतिक चेतना', 'आक्रोश एवं विद्रोह का स्वर', 'तीखे व्यंग कि प्रधानता', 'आशावादी स्वर', 'आम आदमी के दुख दर्द को अभिव्यक्ति', 'काव्य में प्रकृति चित्रण', 'काव्य कि शीलपगत वैशिष्ट्य', यह सब प्रवृतियाँ दृष्टिग्रोचर होती है।

संदर्भ सूची

1) उमाटे (डॉ) साईनाथ, समकालीन हिन्दी कविता का समाजशास्त्र, ए.बी.एस, पब्लिकेशन, वाराणसी, 2016, पृ. 12

2) सिंह केदारनाथ, मेरे साक्षात्कार, विनोद दास से बातचीत (साक्षात्कार), किताबघर प्रकाशन, 2008, पृ. 75

3) उमाटे (डॉ) साईनाथ, समकालीन हिन्दी कविता का समाजशास्त्र, ए.बी.एस, पब्लिकेशन, वाराणसी, 2016, पृ. 11

4) http://cfilt.iitb.ac.in/wordnet/webhwn/wn.php

5) https://ln.run/qsMs3

6) http://hi.wiktionary.org/wiki/समकालीन

7) https://hindishabdsindhu.rajbhasha.gov.in/

8) यू (डॉ) श्रीकला, समकालीन हिन्दी कविता और शमशेर बहादुर सिंह, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2008, पृ. 13

9) शर्मा (डॉ) ब्रजमोहन, समकालीन कविता और लीलाधर जगूडी, दीपू बुक्स, नई दिल्ली, 2010, पृ. 11

10) उमाटे (डॉ) साईनाथ, समकालीन हिन्दी कविता का समाजशास्त्र, ए.बी.एस, पब्लिकेशन, वाराणसी, 2016, पृ. 14, 15

11) वहीं, पृ. 15

12) वहीं, पृ. 94

13) वहीं, पृ. 94

14) वहीं. 94, 95

15) रोहितश्व, समकालीन कविता और सौंदर्यबोध, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1996, पृ. 15

16) उमाटे (डॉ) साईनाथ, समकालीन हिन्दी कविता का समाजशास्त्र, ए.बी.एस, पब्लिकेशन, वाराणसी, 2016, पृ. 95

17) जोशी राजेश, समकालीनता और साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2010, पृ. 30

18) उमाटे (डॉ) साईनाथ, समकालीन हिन्दी कविता का समाजशास्त्र, ए.बी.एस, पब्लिकेशन, वाराणसी, 2016, पृ. 96

19) वहीं, पृ. 96

20) नवल नन्दकिशोर, समकालीन काव्य यात्रा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2004, पृ. 08

21) पी. रवि, समकालीन कविता के आयाम, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2013, पृ. 90

22) सिंह वीरेंद्र सं, समकालीन कविता : सम्प्रेषण : विचार : आक्तथ्य, पंचशील प्रकाशन, 1987, पृ. 24

23) कमाल अरुण, गोलमेज, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2009, पृ. 133, 134

24) कुमार (डॉ) राजेंद्र, आलोचना का विवेक, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2004, पृ. 166

25) शुक्ल विनोद कुमार, अतिरिक्त नहीं, वाणी प्रकाशन, 2000, पृ. 65

26) शुक्ल विनोद कुमार, वह आदमी नया गरम कोट पहिनकर चला गया विचार की तरह, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1981, पृ. 18

27) शुक्ल विनोद कुमार, सब कुछ होना बचा रहेगा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1992, पृ. 114

28) शुक्ल विनोद कुमार, वह आदमी नया गरम कोट पहिनकर चला गया विचार की तरह, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1981, पृ. 23

29) वहीं, पृ. 16

30) शुक्ल विनोद कुमार, अतिरिक्त नहीं, वाणी प्रकाशन, 2000, पृ. 16

31) शुक्ल विनोद कुमार, वह आदमी नया गरम कोट पहिनकर चला गया विचार की तरह, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1981, पृ. 14

32) शुक्ल विनोद कुमार, सब कुछ होना बचा रहेगा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1992, पृ. 35

33) शुक्ल विनोद कुमार, अतिरिक्त नहीं, वाणी प्रकाशन, 2000, पृ. 13

34) शुक्ल विनोद कुमार, सब कुछ होना बचा रहेगा, राजकमल प्रकाशन, 1992, पृ. 52

विनोद कुमार शुक्ल के काव्य में मध्यवर्गीय जीवन

समकालीन कविता में विनोद कुमार शुक्ल एक महत्वपूर्ण कवि के रूप में हमारे सामने आते है। विनोद कुमार शुक्ल का जन्म 1 जनवरी 1937 राजनांदगांव, छत्तीसगढ़ में हुआ। उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा जबलपुर कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर से प्राप्त की। उन्हें 1999 में उनकी रचना 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया। विनोद कुमार शुक्ल बहु प्रतिभा के धनी हैं। उन्होंने पद्य के साथ साथ गद्य में भी अपनी लेखनी चलाई हैं। इनके काव्य संग्रह में "कभी के बाद अभी", लगभग जयहिंद", "वह आदमी चला गया नया गरम कोट पहिनकर विचार की तरह", "सब कुछ होना बचा रहेगा", "अतिरिक्त नहीं", "कविता से लंबी कविता, आदि आते हैं, और उनके गद्य में "नौकर की कमीज", "खिलेगा तो देखेंगे", "दीवार में एक खिड़की रहती थी", "एक चुप्पी जगह", "पेड़ पर कमरा", "हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़" आदि आते हैं।

"विनोद कुमार शुक्ल छात्रवस्था से ही गंभीर घटनाओं और सामाजिक समस्याओं को लेकर कविता लिख रहे थे।"[1] विनोद कुमार शुक्ल ने जब लेखन की शुरुवात की थी तब से वह समाज के गंभीर समस्याओं पर ही अपनी कवितायें रचते थे। उनकी कविता के संदर्भ में "परमानंद

श्रीवास्तव ने कहा हैं कि "धूमिल के बाद प्रतिबद्ध का नया मुहावरा विकसित करने वाले कवियों में विनोद कुमार शुक्ल अन्यतम महत्वपूर्ण है। उन्होंने एक और प्रतिबद्ध दृष्टि, जीवन आस्था और नैतिक विवेक का प्रमाण दिया, दूसरी ओर एक ऐसे स्वतंत्र काव्य मुहावरे के लिए ध्यान आकृष्ट किया जिस पर विशिष्ट प्रतिभा तथा परिवेश को स्थानिक संगतो से गहरी संपृक्ति का निश्चित प्रभाव देखा जा सकता था।"[2] कहने का अर्थ है कि विनोद कुमार शुक्ल के काव्य में प्रतिबद्ध दृष्टि, जीवन आस्था और नैतिक विवेक मिलता है।

3.1 <u>सामाजिक जीवन</u>

मध्यवर्ग का सामाजिक जीवन बहुत कठिन होता है क्योंकि वह एक ऐसा वर्ग है जो उच्च और निम्न वर्ग के बीच में आता हैं। मध्यवर्ग सामाजिक समस्या के कारण अपने हक़ के लिए आवाज भी नहीं उठा पाते। यही सामाजिक परेशानियों को विनोद कुमार शुक्ल ने अपनी कविता में दिखाया है।

"सबसे गरीब आदमी की

सबसे कठिन बीमारी के लिए

सबसे बड़ा विशेषज्ञ डॉक्टर आए

जिसकी सबसे ज्यादा फीस हो ....

कृतज्ञ होकर

सबसे बड़ा डॉक्टर सबसे गरीब आदमी का इलाज करे

और फीस माँगने से डरे।"[3]....(सबसे गरीब आदमी की)

विनोद कुमार शुक्ल ने इस कविता के माध्यम से दिखाया हैं कि किस प्रकार से निम्न मध्यवर्ग के लोगों के लिए सबसे सस्ता डॉक्टर भी बहुत महँगा होता हैं, और गरीब मनुष्य को उस तक पहुँचना संभव भी नहीं होता, समाज की स्थिति इस प्रकार से है की जहां कोई किसी की मदद नहीं करता। इस कविता के माध्यम से दिखाई देता हैं कि वह गरीब आदमी एक ऐसे समाज में एक ऐसे दुनिया की कमाना करता है जहाँ हर कोई सबकी पीड़ा को समझे, जहां सबसे बड़ा और महँगा डॉक्टर गरीब आदमी की विनम्रता से सेवा करे और उनकी फीस न ले। वह ऐसे समाज की कामना करता हैं जहाँ एक अच्छा इंसान हो। कवि ने इस कविता में मध्यवर्ग की सामाजिक स्थिति दिखाई देती हैं।

"न मैं कौआ हूँ

न मेरी चोंच है-

आखिर किस नाक-नक्शे का आदमी हूँ

जो अपना हिस्सा छीन नहीं पाता!!"[4]....(मैं दीवाल के ऊपर)

'मैं दीवाल के ऊपर' कविता में एक मध्यवर्ग बेबस व्यक्ति की सामाजिक व्यथा को दर्शाया हैं। जहां वह भूखा दीवाल के ऊपर बैठा कौए को देख रहा जो अपने हिस्से की रोटी छीन कर लाया हैं। इस कविता से ज्ञात होता हैं कि एक मध्यवर्गीय व्यक्ति समाज में अपने हक़ अपने हिस्से के लिए नहीं लड़ पाते। वह समाज में एक बेबस व्यक्ति की तरह रहता है।

"चाचा के घर पहुँचते ही यही हुआ

छोटे मुन्नू तक ने पूछा- वहाँ पानी गिरा ?

बरामदे में खड़े चाचा से

अकाल, राष्ट्र, और आतंक की चर्चा होने लगी

पास-पड़ोसी आ गये

बहस होने लगी

अंत में मैं कह पाया-

अम्मा बहुत बीमार हैं।

यह खबर बताने में मुझे देर हुई

इतने दिनो से कहीं बारिश नहीं हुई।"[5]....(गाड़ी से उतरते ही)

'गाड़ी से उतरते ही' कविता में गहरी सामाजिक चिंता को देख सकते है। कवि अपने चाचा के घर अपनी चिंता अपने दुख को जाहीर करने हेतु आता है, लेकिन चाचा के घर पहुँचते ही उन्हे सिर्फ एक प्रश्न पूछा जाता हैं कि क्या उनके यहाँ पानी गिरा? जब सारे गाँव के लोग सामाजिक स्थिति पर चर्चा करते हैं तब उसमें सहभागी होकर अंत में बता पाता हैं की अम्मा बीमार है, और बताते वक्त वह समझ नहीं पता की कौनसी समस्या ज्यादा बड़ी है, उनकी या समाज की। यह कविता इस बात को उजागर करती हैं की सामाजिक समस्याओं, चिंताओं के बीच आम आदमी की चिंताएँ महत्वपूर्ण होकर भी समाज के कारण अपना महत्व खो देती हैं।

"घर के लोगों से घर का संबंध नहीं

तथा यह सामाजिक समाज नहीं

तथा थोड़ी दूर पर रहने वाला मेरा भाई

कई दिनों से मिला नहीं

तथा सड़क से जाते हुए वह मुझे दिखा

उसने भी देखा

पर चला गया"[6]....(तथा)

'तथा' कविता में विनोद कुमार शुक्ल जी ने सामाजिक यथार्थ को दिखाने का प्रयास किया है। जहाँ एक मनुष्य अपनी चिंताओं से समाज में टूटता चला जा रहा हैं। सामाजिक समस्या के कारण परिवारों से टूटता, दूर होता जा रहा हैं। इस कविता में हम देखते है कि समाज में घर का घर के लोगों से कोई संबंध नहीं हैं, कवि कहता हैं कि यह सामाजिक समाज नहीं जहाँ अपने अपनों को पहचानने से नकारते हैं। इस कविता में समाज की उस स्थिति को दिखया हैं जहाँ कोई किसी का नहीं होता है, समाज में इंसानियत दिखाई नही देती जहाँ एक दुकानदार राशन लेने आए हुए लोगों को माँ-बहन पर गलियाँ दे रहा है ताकि वह लाइन में खड़े रहे।

"कितना भी अंधेरा क्यों न हो

जेल की कोठरी के अंदर,

पर कुछ कम अंधेरा होता होगा दिन।

जेल बहुत तकलीफ़देह और खौफ़नाक हो....

मैं नहीं गया जेल के अंदर

पर दोस्त कहता है

उससे भी ज्यादा तकलीफ़देह और खौफ़नाक

जेल के अंदर जो कुछ है

वह जेल के बाहर है।"[7]....(स्टेशन की तरफ़ आते-जाते)

कवि ने 'स्टेशन की तरफ आते जाते' कविता में समाज के कुरीतियों को बताया हैं, कि समाज में कितना अंधेरा, डर है। यह एक प्रतिकात्मक कविता है जहाँ 'जेल' शब्द एक प्रतीक है जिसे गरीब के घर के साथ संबोधित किया गया है। यहा विनोद कुमार शुक्ल अपने कविता के माध्यम से कहते है कि मध्यवर्गीय लोगों को घर में आर्थिक स्थिति के कारण तकलीफ होती है, किन्तु मध्यवर्ग को घर की तकलीफ़ से ज्यादा समाज में तकलीफ होती है। घर के अंधकार में तो वह किसी भी तरह से रेह सकते है पर समाज के अंधकार में नहीं रह पाते।

इन सभी कविताओं के माध्यम से देख सकते है कि मध्यवर्ग को समाज के कारण कौनसी समस्याएँ आती है और वह अपनी समस्याओं से ज्यादा समाज कि समस्याओं को अहमियत देता है।

3.2 राजनैतिक जीवन

मध्यवर्ग को राजनीति के कारण बहुत से परेशानियों का सामना करना पड़ता है, राजनैतिक शोषण के कारण बहुत सारी आर्थिक समस्याओं से गुजरना पड़ता है। विनोद कुमार शुक्ल ने राजनीति पर व्यंग्यात्मक काव्य लिखे है। रचनाकार ने अपनी कविता के माध्यम से राजनीति के काले करतूतों को समाज के सामने लाया हैं, और राजनीति के कारण आनेवाली विडम्बना का मध्यवर्ग को क्या सामना करना पड़ता है यह सब कविता के माध्यम से दिखाया है।

"और लहर का चेहरा नदी से मिलता-जुलता है।

पानी से भरी बाल्टी का चेहरा नदी से मिलता-जुलता है।

संसद के कंगी के आकार के होने की प्रक्रिया में

सरकार के सिर पर बाल नहीं थे।"[8]....(राजनैतिक बहस में सूखे को लेकर)

'राजनैतिक बहस सूखे को लेकर' एक व्यंग्यात्मक कविता है जिसमे रचनाकार वर्तमान राजनीतिक स्थिति पर व्यंग करते है। सरकार और उच्चवर्ग के लोग राजनीति के आड़ में पूरे व्यवस्था का लाभ उठाते हैं, किन्तु मध्यवर्गीय लोग राजनीति के कारण शोषित रहते हैं। उन्हे किसी भी सुविधा का लाभ नहीं मिलता। नेता मध्यवर्गीय लोगों को अच्छी

सुविधाएं देने की, आदर्शों की बात करते है, पर खुद उससे विमुख हो जाते है। सरकार जब तक कंगी का आकार लेगी तब तक उनके सिर के सारे बाल गायब हो जाएंगे। अर्थात इस राजनीतिक व्यवस्था से कवि असंतुष्ट है। इस हटाने की प्रक्रिया में कही हम पीछे न छूट जाएँ कहते है। इस कविता के माध्यम से कवि ने राजनीति करने वालों का असली चेहरा समाज के सामने लाया हैं।

"घर से बाहर निकलने की गड़बड़ी में

इतना बाहर निकल आया

कि सब जगह घुसपैठिया होने की संभावना थी।

घुसपैठिया कि देशिहा!!"[9]...(घर से बाहर निकलने कि गड़बड़ी में)

'घर से बाहर निकलने की गड़बड़ी में' कविता राजनीति में होनेवाली घुसपैठियों के बारे में बताती है। जहा कवि कहते है कि घर से बाहर निकलने की गड़बड़ी में इनता बहार आ गया की सारे जगह उन्हें घुसपैठि दिखाई देने लगे है और इन घुसपैठियों के कारण ही आम जनता पर, मध्यवर्ग पर राजनैतिक शोषण होता आ रहा है। कवि का कहना है कि राजनीति में इस प्रकार की व्यवस्था होने के कारण आम आदमी को

बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ता हैं। आम आदमी इसके खिलाफ विद्रोह भी नहीं करता वह इन सबसे दूर भागते है।

"रौबदार आदमी दाड़ी बनाकर रौबदार था।

हम दाड़ी बनाकर नौकरी करते थे।

नागरिकता में ऊँचाई

मैदान एक सपाट समतल सीढ़ी था।

जिस पर मैं चढ़ता या उतरता था

या चलता था।"[10]....(बिस्तर भूल गया था)

यह कविता राजनीतिक शोषण पर आधारित है। जहाँ दिन एक मुखौटा पहनकर आता हैं और पूरे शहर में घूमता हैं। यहा 'दिन' एक बदलाव का प्रतीक है। देश एक स्वतंत्र पक्षी था जो अब पिंजड़े सहित पेड़ पर बैठा हुआ है। यहा 'पिंजरा' प्रतीक के रूप में आया है, अर्थात हमारा देश स्वतंत्र होकर भी राजनीतिक कुरीतियों के कारण स्वतंत्र नहीं है। आम जनता पर राजनैतिक शोषण होता आ रहा हैं। नेता, उच्चवर्ग के लोग रौबदार रहते हैं किन्तु मध्यवर्ग के लोग काम कर अपना पेट पालते है, राजनीति के कारण अनेक परेशानियों का सामना करते है। कवि इस

कविता के माध्यम से दिखाते हैं कि किस प्रकार से मध्यवर्ग के लोग दिन का मुखौटा पहने अंधकार को समाप्त करना चाहते हैं, यानि राजनीतिक शोषण से अपना बचाव करने का प्रयास करते हैं।

"तथा लाउड स्पीकर से

भाइयो और बहनो संघर्ष हमारा नारा है

चिल्लाता एक जुलूस गया

तथा माँ-बहिन की गाली से जन्मे लड़के ने

लाइन से बाहर आकर

जुलूस वालों को माँ-बहिन की गाली दी

तथा बहुत लंबी लाइन देखकर फिर

लाइन से बाहर ही खड़ा रहा

और केवल तथा यह राजनैतिक समाज नहीं।"[11]....(तथा)

आम इंसान निराशा के बीच अपना जीवन जी रहा है, राजनेता सिर्फ चुनाव के वक्त नारा लगता हैं। चुनाव के बाद सब भूल जाता है। इस कविता में दिखाया हैं कि जब एक जुलूस नारा लगाता है तो एक लड़का राशन लाइन में खड़ा था वह लाइन से बाहर आकार उनको गाली देने

लगता है और लाइन लंबी होने के कारण लाइन में वापस नहीं जाता, अर्थात कहने का अर्थ यह है कि समाज के इस वर्ग का अनुभव 'राजनीति के समाज' से अलग हैं जो समाज के इस वर्ग यानि मध्यवर्ग और निम्न वर्ग के नाम पर राजनीति कर रहा है। इस कविता से ज्ञात होता हैं कि समाज के नाम पर राजनेता षड्यंत्र रचता है। जिससे उनका फायदा होता है और आम आदमी को सारी तकलीफ़ और परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

"सहेज समय से बुरी तरह दुर्घटनाग्रस्त होकर

आज अभी भी भाषा में बोलते हुए

बाविष्य वक्ताओं की भीड़ से दबकर

भाषाविहीन मेरी चीख निकलती है

कभी धर्म और जाती के

राजनैतिक, अराजनैतिक जुलूस से दबकर

धर्मविहीन, जातिविहीन चीख चीखता हूँ।"[12]....(अतीत को स्मरण)

'अतीत को स्मरण' कविता में विनोद कुमार शुक्ल ने समाज के साथ राजनैतिक समस्याओं को उठाते है। राजनैतिकता के कारण आनेवाली

विसंगति, विडम्बना को सामने लाती है। इस कविता में राजनीति के कारण होने वाली धार्मिक, जातिक समस्या के बारें में उल्लेख किया गया हैं।

विनोद कुमार शुक्ल के इन कविताओं के माध्यम से मध्यवर्ग की राजनैतिक स्थिति का ज्ञात होता है। उनकी कविताओं में राजनीति घुसपैठी होने के कारण मध्यवर्ग को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। किस तरह राजनेता समाज में मध्यवर्ग को लूटता जाता है यह सब उनकी कविताओं में देखने को मिलता है।

3.3 <u>आर्थिक जीवन</u>

मध्यवर्ग में आर्थिक स्थिति एक मुख्य त्रासदी की तरह सामने आती है। आर्थिक स्थिति के कारण ही मध्यवर्गीय मनुष्य कुछ करने से या आगे बढ़ने से अपने आप को रोकते हैं। आर्थिक त्रासदी के कारण ही अपने सपनों को, अपनी इच्छाओं को पूरा नहीं कर पाते। इस वर्ग की आर्थिक स्थिति उतनी ज़्यादा या कम नहीं होती है, इन दोनों के बीच की होती है। विनोद कुमार शुक्ल ने मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति को बारीकी से अपनी कविताओं में दर्शाया है। आर्थिक स्थिति के कारण जीवन में आने वाली समस्याओं को दिखाया है।

यहां हम विनोद कुमार शुक्ल के काव्य के माध्यम से मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति को देख सकते हैं। विनोद कुमार शुक्ल ने अपने काव्य में मध्यवर्ग की आर्थिक परिस्थितियों को इस प्रकार से दिखाया है।

"जबकि मेरे पास

सौ रुपये का नोट था

उसकी शक्ल

बिलकुल आपके सौ रुपये के नोट की है-

तुलजाराम सेवकराम बैंकर्स !!

मेरी शक्ल आपकी तरह नहीं है इंदरचंद !

मैं बिलकुल नहाया धोया

कपड़े साफ़ सुथरे

मेरी शक्ल क्या खराब है !!"[13]....(मुझे उधार लेना है)

"मुझे उधार लेना है" इस कविता में देख सकते हैं कि किस प्रकार से एक आदमी अपने परिवार का कम पैसों में भी ख़्याल रखता है, किंतु जब उसे अपने परिवार के लिए ही उधार लेने की ज़रूरत पड़ती है तो उन्हें बहुत से परेशानियों का सामना करना पड़ता है, वह अच्छे कपड़े पहनकर भी जाता हैं ताकि उसे बैंक द्वारा उधार मिल जाये किंतु इतना

सब करने पर भी बैंक द्वारा उन्हें उधार नहीं मिलता तथा उन्हें उधार मिलने की संभावना नहीं होती है। वह बैंक वालों से पूछता हैं आखिर उसे उधार लेने के लिए क्या करना पड़ेगा।

"आकाश की तरफ

अपनी चाबियों का गुच्छा उछाला

तो देखा

आकाश खुल गया है।

जरूर आकाश में

मेरी कोई चाबी लगती है!

शायद मेरी सन्दुक की चाबी!!"[14]....(आकाश की तरफ)

इस तरह "आकाश की तरफ़" कविता में कवि ने दिखाया है कि जब एक लड़का अपनी चाबियों का गुच्छा आकाश की तरफ़ फेकता है तो उसे लगता है कि उसकी चाबी के कारण आकाश का संदूक खुल गया है जैसे आकाश को उसके सन्दुक की चाबी लगी हो, तो वह सोचता है कि जिस प्रकार से आकाश का दरवाज़ा खुला है और उसे आकाश के नज़ारे दिख रहे है, उसी प्रकार से अगर उसके पैसों की बचत हो और जब वह अपनी चाबी से संदूक खोले तो उसमें पैसे मिले किंतु इस तरह

से नहीं होता आकाश के नज़ारे की तरह उसके सन्दुक में उसे कुछ नहीं मिलता और उसके पैसों की बचत नहीं होती। तो यहां पर इस कविता के माध्यम से देख सकते हैं किस प्रकार से उसे आर्थिक परेशानियों से गुज़रना पड़ता है।

"यह चाहता हूँ

कि जब पानी आए

तो पेहले आखें भिगो दे

फिर कोई चिड़िया

मेरी बाँहों की हरियाली में घोंसला बनाए

अंडे दे।"[15]....(वृक्ष की सुखी)

"वृक्ष की सूखी" कविता में उन्होंने आर्थिक त्रासदी को सूखे वृक्ष से संबोधित किया है। यह एक प्रतिकात्मक कविता है। जहां एक मध्यवर्गीय व्यक्ति देखता हैं कि जिस प्रकार सूखने से वृक्ष की हालत हुई है उसी प्रकार से अपने आर्थिक स्थिति के बारे में सोचता है कि उसकी आर्थिक स्थिति भी इस सूखे वृक्ष की तरह हैं। वह सूखे वृक्ष के टेहनियों के समांतर अपनी बाँहें फैलाता है। वह साथ में यह सोचता हैं की अगर पानी डालने से वृक्ष हरा-भरा हो जाएगा और उसकी बाँहों की हरियाली में चिड़िया अंडे दे इस प्रकार हो सकता है तो उसकी आर्थिक स्थिति में

बदलाव आने की संभावना भी होगी उसकी आर्थिक स्थिति बदल जाएगी। विनोद कुमार शुक्ल ने इस कविता के माध्यम से मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति को दिखाया है।

"लड़की हरे-भरे पेड़ देखती है

तो उसे आकाश दिख जाता है।

ऊंचे-ऊंचे मिले-जुले मकान देखती है

तो आकाश दिख जाता हैं।"[16]....(लड़की हरे-भरे पेड़ देखती है)

"लड़की हरे भरे पेड़ देखती है" यह एक प्रतीकात्मक कविता है, आकाश इस कविता में ख्वाब का प्रतीक है, जिसमें कवि ने एक लड़की की बात की है जो बहुत परेशान है कारण उसकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है, जब कभी वह बाहर जाती या कुछ देखती तो उसे हर वक्त आकाश दिख जाता अर्थात वह हर वक्त एक ख़्वाब देखती है की उसकी आर्थिक स्थिति बदल जाए और उसे परेशानियों का सामना न करना पड़े।

"लड़कों ने

लकड़ियों में आग लगाकर

आग की ऊँची-ऊँची लपटों की

हिलती डुलती छाया में

धूप से बचने की बात सोची।

उन्होंने सोचा, चिड़िया पकड़ें

तो चिड़िया की छाया भी

पकड़ में होगी।"[17].....(सब जगह तेज धूप)

"सब जगह तेज़ धूप" इस कविता में तेज़ धूप से बचने की कोशिश करते हुए लड़के दिखाए गए हैं जो छाया लाने की कोशिश करते है यह भी एक प्रतीकात्मक कविता है। जहां धूप को आर्थिक परेशानियों के साथ संबोधित किया गया है। छाया को आर्थिक स्थिति को सुधारने के साथ संबोधित किया गया है। इस कविता में मध्यवर्ग का संघर्ष दिखाइ देता है। जहां सब अपनी आर्थिक स्थिति को बदलने के लिए बहुत तरकीबों को अपनाते है। फिर भी उनकी आर्थिक स्थिति नहीं बदलती और वह अंत तक प्रयास करते रहते हैं।

अतः विनोद कुमार शुक्ल के कविताओं से ज्ञात होता है कि मध्यवर्ग और निम्न मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति बहुत कठिन होती है। हर समय सिर्फ वह अपने परिस्थिति को बदलने का प्रयास ही करते रहते है।

3.4 पारिवारिक जीवन

समाज में मध्यवर्ग को आर्थिक त्रासदी के कारण ही पारिवारिक जीवन में समस्याएँ आने लगती है। आर्थिक परेशानियों के कारण परिवार की छोटी से छोटी इच्छा पूरी करने में भी बहुत कठिनाई आती है। रचनाकार ने अपनी कविताओं में आर्थिक समस्या और अन्य समस्या के कारण होने वाली पारिवारिक समस्या को अपने काव्य में बारीकी से दर्शाया है।

"कितना कुछ नुकसान हानि

दस रुपये के नोट का

पत्नी से खो जाना

ठीक से उसका

खाना न खाना

इतना दुःख

या भूल गई वह

नोट कहीं सुरक्षित रख

जान-बुजकर

कि जब तक याद नहीं

तब तक जमा रहेगा।"[18]...(कितना कुछ नुकसान हानि)

'कितना कुछ नुकसान हानि' कविता में आर्थिक समस्या के कारण आई पारिवारिक दशा दिखाई देती हैं। जहां पत्नी दस रुपये का नोट खो जाने के कारण इतना दुखी हो जाती है कि वह खाना भी नहीं खाती। कवि कहता हैं कि पत्नी पैसे कहीं रखकर भूल गयी होगी या फिर पैसों की बचत हो इस कारण छुपाया होगा, यहा इन पंक्तियों से ज्ञात होता है कि घर गृहस्थी चलाने के लिए पत्नी किस प्रकार एक एक पैसा बचाती हैं। किसी मध्यवर्ग आदमी के लिए दस रुपये का नोट इतना महत्वपूर्ण होता है, कि उसके खो जाने पर खाना छोड़ देना, चीनी का डिब्बा गलती से टूट जाने पर दुखी होना, यह सोचकर कि उन पैसों से घर में चावल या गेहु आ जाता। इस कविता में विनोद कुमार शुक्ल ने दिखाया है कि उनकी पारिवारिक जीवन ठीक हो इस कारण आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए पत्नी टोटका करना चालू कर देती है। मध्यवर्गीय परिवार में कोई एक चीज टूट जाएँ तो उन्हें नुक़सानों का सामना करना पड़ता है, इस कविता से यह समझ में आता हैं कि पैसों के कारण पारिवारिक जीवन में बहुत कठिनाई आती है, एक एक बार ऐसे दिन आते है कि वह भूखे सोने का भी प्रयास करते है।

"पत्नी ने प्रेमिका से कहा

कि गुजर हो जाती है

अब ऐसा लगता है

कि प्रांत में नहीं

बस किराये के मकान में रहते हैं

झाड़ू पोछा प्रांत में नहीं

घर में लगाते हैं

गृहस्थी बहुत छोटी हैं

एक लड़का एक लड़की हैं"[19]....(पाँच साल कि सबसे छोटी लड़की)

इस कविता में कवि ने आर्थिक स्थिति के कारण होने वाली पारिवारिक समस्याओं को दिखाया है। "पाँच साल की सबसे छोटी लड़की" इस कविता में दिखाया है कि किस प्रकार से किराए के मकान में रहने के कारण और किराया ज्यादा होने के कारण आर्थिक परेशानियां शुरू होती है। पत्नी किस प्रकार से कम पैसों में घर का गुजारा कर लेती है। ऐसी विडंबना को उन्होंने इस कविता के माध्यम से दिखाया है। इस कविता का शीर्षक "पाँच साल की सबसे छोटी लड़की" इसलिए दिया गया है क्योंकि जब मकान मालिक किराया लेने आता है तब वह छोटी लड़की

अपने दादा के पास भागकर कहती है कि उनकी प्रेमिका आई है। तो यह हम देख सकते हैं कि उनकी बेटी को उनकी स्थिति के बारें में पता न चले इसलिए वे अपनी बेटी को कुछ नही बताते और किराया लेने आनेवाले को वह प्रेमिका हैं यह कहते है।

"मेरा हाथ पकड़े हुए वह मेरे पास लौट रही है

जब में लौट रहा हूँ उसके पास

उसका हाथ पकड़े।"[20]....(बराबर दूर होती वह)

इस कविता में कवि कह रहा हैं कि इतनी समस्या, मुश्किले होने के बावजूद भी कवि और उनकी साथी हर एक समस्या में एक साथ खड़े रहते है। इस कविता में कवि ने दिखाया हैं कि पारिवारिक ही नहीं बल्कि कोई भी समस्या आने पर उनकी साथी हमेशा उनके साथ खड़ी रहती हैं।

"एक सिलसिला होता है

रात का समय

अपने बच्चों के बारें में बात करने का

उनकी तकलीफ़ शरारतों के साथ

दुनिया-भर के बच्चों की बात।"[21]....(बहुत आसान है रात)

'बहुत आसान है रात' कविता में कवि ने बताया है कि दुनिया की भाग दौड़ी में पूरा दिन चला जाता है कि वह दिन में अपने परिवार को समय नहीं दे पाते, परिवार की समस्या पर चर्चा नहीं कर पाते। उन्हे सिर्फ रात का समय मिलता हैं जहां वह अपने बच्चों उनकी तकलीफ़ों के बारें में बात कर सकते है, और बात करते करते रात दिन कब होता है इसका ज्ञात ही नहीं होता। विनोद कुमार शुक्ल ने केवल आर्थिक त्रासदी के कारण होने वाली पारिवारिक परेशानियाँ ही नहीं बल्कि अन्य समस्याओं के कारण आने वाली पारिवारिक जीवन में त्रासदी को दिखाया है।

"घर संसार में घुसते ही

पहचान बाटनी होती है

उसकी आहट सुन

पत्नी बच्चे पूछेंगे "कौन"?

"मैं हूँ" वह कहता है

तब दरवाजा खुलता है।

घर उसका शिविर है

जहाँ घायल होकर वह लौटता है।"[22]....(घर संसार में घुसते ही)

यह कविता कवि ने कुछ अलग ढंग से लिखी हैं, जहां वे घर आदमी का शिविर होता है ऐसा कहते है। कवि ने आम आदमी के उसकी जिंदगी में उसके परिवार की क्या अहमियत है, इस कविता के तहत दिखाया है। कवि कहता हैं कि आम आदमी के लिए उनका घर परिवार एक शिविर की तरह होता हैं, जहाँ वह दुनिया से ठोकर खाकर, रोज घायल होकर आता है। यह कविता दिखाती हैं कि मानसिक तनाव के दौरान बाहर की दुनियाँ में एक मनुष्य की हालत कैसी होती हैं, बाहर की दुनिया में कोई समझने वाला नहीं होता। वह उधार पान मांगकर खाता है, और वही रुकता है, जब तक वह परास्त ना हो। घर आते ही उसे बहुत सुकून सा मिलता हैं। उस आम आदमी के लिए उसका घर परिवार ही उसकी शांति होती है।

यह कविता एक आम आदमी के बाहर की दुनिया की स्थिति से परिचित कराता है जहां हर एक समय मध्यवर्ग ठोकर खाता रेहता है। उनका घर ही उनका सब कुछ होता है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि कवि विनोद कुमार शुक्ल ने अपने काव्य में मध्यवर्ग की सारी परेशानियों को अपने काव्य में दर्शाया है। उन्होंने मध्यवर्ग के सभी पहलुओं को बरिके से समझा और अपने काव्य की रचना की। कवि मध्यवर्ग के सामाजिक जीवन से अच्छी तरह से

परिचित है और मध्यवर्ग में उत्पन्न सामाजिक विसंगतियों को बारीकी से जानते है तथा उसको समाज के सामने लाने का प्रयास करते है। कवि ने राजनीति के कुरीतियों को भी अपने काव्य में दिखाया है। राजनीति पर उन्होंने व्यंग किया है। इसी के साथ आर्थिक विषमता के कारण मध्यवर्गीय लोग अपने सपनों को केवल सपनों तक ही रखते है उसे पूरा नहीं कर पाते। कवि इसी के साथ यह भी बताना चाहते है कि मध्यवर्गीय लोग अपने आर्थिक स्थिति को बदलने की कोशिश अंत तक करते रहते है। कवि ने मध्यवर्गीय परिवार की समस्या को अपनी कविताओं में दर्शाया है तथा मध्यवर्ग की पारिवारिक स्थिति को समझने का प्रयास किया है।

संदर्भ सूची

1) वावळकर शिवदत्ता, उपन्यासकार विनोद कुमार शुक्ल, विद्या प्रकाशन, कानपुर, 2010, पृ. 22

2) वहीं, पृ. 23

3) शुक्ल विनोद कुमार, सब कुछ होना बचा रहेगा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1992, पृ. 35

4) शुक्ल विनोद कुमार, वह आदमी नया गरम कोट पहिनकर चला गया विचार की तरह, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1981, पृ. 23

5) शुक्ल विनोद कुमार, अतिरिकता नहीं, वाणी प्रकाशन, 2000, पृ. 110

6) वहीं, पृ. 15

7) शुक्ल विनोद कुमार, वह आदमी नया गरम कोट पहिनकर चला गया विचार की तरह, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1981, पृ. 51

8) वहीं, पृ. 14

9) वहीं, पृ. 18

10) वहीं, पृ. 16

11) शुक्ल विनोद कुमार, अतिरिकता नहीं, वाणी प्रकाशन, 2000, पृ. 16

12) वहीं, पृ. 33

13) शुक्ल विनोद कुमार, वह आदमी नया गरम कोट पहिनकर चला गया विचार की तरह, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1981, पृ. 21

14) वहीं, पृ. 24

15) वहीं, पृ. 26

16) वहीं, पृ. 34

17) वहीं, पृ. 47

18) शुक्ल विनोद कुमार, कविता से लंबी कविता, राजकमल प्रकाशन, 2001, पृ. 81

19) शुक्ल विनोद कुमार, वह आदमी नया गरम कोट पहिनकर चला गया विचार की तरह, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1981, पृ. 39

20) वहीं, पृ. 38

21) वहीं, पृ. 41

22) शुक्ल विनोद कुमार, सब कुछ होना बचा रहेगा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1992, पृ. 28

विनोद कुमार शुक्ल की भाषा शैली

4.1 भाषा

भाषा एक ऐसा साधन है जिससे हम अपने विचारों को व्यक्त करते है। भाषा मानव के भावभिव्यक्ति का प्रमुख्य साधन है। भाषा अपने भावों को व्यक्त करने का एक प्रमुख्य और महत्वपूर्ण साधन है। साहित्य में भाषा का महातपूर्ण योगदान रहा है बिना भाषा के कोई भी साहित्य रचा नहीं जा सकता। रचनाकार अपने साहित्य में भाषा के माध्यम से ही अपनी बात रखता है।

हर एक रचनाकार की अपनी अलग भाषा और शैली होती है जिससे उनका साहित्य एक अलग रूप लेता हैं और एक दूसरे से भिन्न होता है।

सुप्रसिद्ध कवि विनोद कुमार शुक्ल के काव्य की भाषा और रचना शिल्प एक ही है क्योंकि उनके काव्य की भाषा ही उनके शिल्प को गढ़ती है। "शब्द, अर्थ, पद और वाक्य सारे स्तरों पर वे अपने रचना कौशल्य से रूढ़िगत प्रयोग के मुहावरों को तोड़ते है और उनमें अपनी मौलिकता से एक विलक्षण चमक भरकर कविता को रचते हैं।"[1] कविता की मूल भावना और कल्पना ही विचार और संवेदना में निहित होते हैं, किन्तु

जब विनोद कुमार शुक्ल काव्य रचते है तब वे बिना भावुक हुए भाषा और शिल्प के प्रयोग से भावना को विचार और संवेदना में रूपांतरित करते है।

मध्यवर्ग जो अपने अधिकार हासिल करने में समर्थ नहीं होते और लगातार समस्याओं में घुटता, टूटता रहता है, इन समस्याओं को विस्तार से बताने के लिए कवि ने सीधी सरल शैली का प्रयोग किया हैं जिससे आसान भाषा में वे अपनी बात रख सके।

मूलतः विनोद कुमार शुक्ल का काव्य रसास्वाद वाला नहीं होती है। विनोद कुमार शुक्ल की काव्य भाषा सरल हैं किन्तु वे कुछ जटिल शब्दों का अपने काव्य में प्रयोग करते है। उनकी काव्य भाषा हिन्दी है। वे प्रतिकात्मक, चित्रात्मक, व्यंग्यात्मक का प्रयोग करते है। उदाहरण के लिए 'वृक्ष की सुखी', 'आकाश की तरफ', 'राजनैतिक बहस में सूखे को लेकर' आदि। उन्होंने छोटी और लंबी कविताओं की रचना की है। उन्होंने अपने काव्य में कहवातो और मुहावरों का भी उपयोग किया है।

'यह सड़क' कविता में जो तथ्य है कि इसका केंद्र केवल श्रम और श्रमिक की महत्ता है। उसे दर्शाने के लिए भाषा और शिल्प के रूढ़ियों को तोड़ते हुए कवि नया मुहावरा ढूँढता है। इसमें आया 'मजदूर' शब्द पर अगर ध्यान न दिया जाए तो पाठक घुमराह हो जाएगा क्योंकि

कलात्मक प्रस्तुति के इस मुहावरे में सड़क शब्द का जोड़ इतना है कि ध्यान केवल सड़क और उसके वर्णन में खो जाएगा।

"यह सड़क

जा रही है कहूँगा-

मैंने देखा

सड़क पर एक मजदूर जा रहा था।

आदमी तो फिर भी अलाल है

पिछड़ गया है

उसे लेने-

यह सड़क लौट रही है कहूँगा

जो उस मजदूर के द्वारा

पीछे छूटी हुई थी।"[2]....(यह सड़क)

"एक अजनबी पक्षी

एक पक्षी की प्रजाति की तरह दिखा

जो खाड़ी युद्ध के

पहले बम के विस्फोट की आवाज से

डरकर यहाँ आ गया हो।"[3]....(एक अजनबी पक्षी)

यहा एक सामान्य कथन 'एक अजनबी पक्षी' को विनोद कुमार शुक्ल ने एक पक्षी की प्रजाति की तरह को 'विशेषणात्मक' वाक्य से उपमापूर्वक विलक्षण बना देती है।

विनोद कुमार शुक्ल के काव्य भाषा पर विचार करते हुए नन्दकिशोर नवल का मत है कि "विनोद जी शब्दों से खेलना पसंद करते है। उनमें शब्द क्रीडा से कविता बनाने की प्रवृति है।"[4] नन्दकिशोर जी का मानना है कि विनोद कुमार शुक्ल अपना काव्य शब्दों से खेलकर रचते हैं उन्हें शब्दों का चुनाव किस प्रकार से करना है यह पता है।

कवि विनोद कुमार शुक्ल के भाषा के संदर्भ में अशोक बाजपेयी का मत है कि -"भाषा और मुहावरे की समृद्धि को यदि पारंपरिक माना जाए तो विनोद कुमार शुक्ल की कविता को समृद्ध की बजाय विपन्न मानना होगा। लेकिन वे यह भी कहते है कि उनकी कविताओं में जो शब्द आते है वे असाधारण होते हैं और कभी कभी विन्यास को अप्रत्याशित मोड़ देकर या सामान्य शब्दों-छवियों को एकाग्र सघनता और पारदर्शिता देकर उनका अर्थ विस्तार करते हैं। उनकी भाषा कुछ-कुछ स्वाभाविक रूप से उन गहरी जोड़ों से कटी होती है।"[5]

विनोद कुमार शुक्ल की शैली आसान भाषा को घूमा-फिराकर और अमूर्त बनाकर रख देने की है। कविता में कड़वी बात भर देने का स्वभाव हैं जिसके कारण कविता रस विरोधी बनकर शुष्क बन जाती है। उनकी काव्य शैली में विरोधभास काव्य देखने को मिलता हैं उदाहरण के लिए 'चित्रकार को मेरी कविता पसंद नहीं'।

4.2 शब्द चयन

विनोद कुमार शुक्ल ने अपने काव्य में शब्दों का चयन बहुत अच्छी तरह से किया है। उनके काव्य में अलग अलग प्रकार के शब्दों का भंडार मिलता है और वही शब्द उनके काव्य को निखारते है। उदाहरण के लिए जैसे:- आंचलिक शब्द, विदेशी शब्द और अप्रचलित शब्द।

4.2.1 आंचलिक शब्द

उर्वरा, फासिल, पारदर्शी, तुलावों, नीग्रो, हब्शि, फुल्ली, पगडंडियों, धौलागिरि, खूँटी, आदि।

4.2.2 विदेशी शब्द

बैंक, ड्राइवर, लाइन, स्कूल, डॉक्टर, ब्लड़े, फोटो, राइफलों, लाउडस्पीकर, बेडरूम, म्युनिसिपैल्टी, गुडमोर्निंग, ब्रेकफ़ास्ट, फ़्रेम, टाई, बूट, स्टोर, आदि।

4.2.3 अप्रचलित शब्द

नफ़े, बेपढ़े, मुस्तैद, साले, लद्दी, ग्रामबाटों, मरुस्थल, रौताइन, अभ्रक, ऊनी, आदि।

4.3 प्रतिकात्मक शैली

विनोद कुमार शुक्ल ने अपने काव्य में प्रतिकों का प्रयोग बखूबी अच्छी तरह से किया है। प्रतिकों के माध्यम से उनका काव्य और निखरकर आता हैं, रचनाकार ने प्रतिकों का उपयोग कर अपने काव्य की वाक्यरचना के सौंदर्य को और भी बढ़ाया है। उन्होंने मध्यवर्ग की अवस्था को दर्शाने के लिए वृक्ष की सुखी, घोंसले, आकाश, धूप, छाया, जेल, प्रेमिका, पिंजरा, घुसपैठिया आदि शब्दों का प्रयोग किया है। कवि ने अपने काव्य में अधिकतर प्रकृति से जुड़े हुए शब्दों का उपयोग प्रतिकों के लिए किया है जिससे उनकी कविता को समझने में और भी आसानी हो जाती है।

"सड़क पर निकाल आए

दाएँ जाए या बाएँ

उसे आकाश दिख जाता हैं।"[6]....(लड़की हरे-भरे पेड़ देखती है)

यह कविता विनोद कुमार शुक्ल की प्रतिकात्मक कविता है। इस कविता में आकाश एक प्रतिक हैं, जो सपने, ख्वाब को संबोधित करता हैं। जहा एक लड़की हर वक्त सिर्फ सपना देखती।

इसी तरह उनकी और कवितायें हैं जो प्रतिकात्मक है जैसे की 'वृक्ष की सुखी', 'सब जगह तेज धूप', 'स्टेशन की तरफ आते-जाते', 'घर से बाहर निकालने की गड़बड़ी में', 'बिस्तर भूल गया था' आदि। उन्होंने अपनी ज़्यादातर कविताओं में प्रतिकों का प्रयोग नहीं किया हैं।

4.4 चित्रात्मक शैली

विनोद कुमार शुक्ल के काव्य में चित्रात्मक शैली को भी देख सकते हैं, वह अपने काव्य में चित्रों का उपयोग करते हैं। जिससे पाठकों को पढ़ने में और रुचि आती है। उनके काव्य का सौंदर्य बढ़ाते है। जैसे की :-

"खुले आकाश में

बहुत ऊँचे

पाँच बममारक हवाई जहाज

दिखे और छुप गए__"[7]....(आकाश की तरफ)

इस कविता के माध्यम से कवि ने अपने कविता में दिखाया है कि जब आकाश चाबी से खुल जाता हैं तो उसे आकाश में बहुत कुछ दिखने लगता।

'अपने हिस्से में लोग आकाश देखते है' यह भी एक चित्रात्मक कविता है, इस कविता में उन्होंने चित्रों जैसे की आकाश, चंद्रमा, बगीचा, हवा आदि का प्रयोग कर मध्यवर्ग की स्थिति को दिखाया है। विनोद कुमार शुक्ल अपने काव्य में एक अलग प्रकार की शैली का उपयोग कर अपना काव्य सबसे अलग बनाते हैं।

4.5 <u>वर्णनात्मक शैली</u>

रचनाकार विनोद कुमार शुक्ल ने अपने कविता में बारीकी से मध्यवर्ग के परिस्थिति का और अन्य विषय पर लिखी कविताओं का वर्णन किया

है। उन्होंने अपने हर एक कविता में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है। उनकी लंबी कविताओं में बारीकी से वर्णन किया नजर आता हैं।

"इसी हड़बड़ी खोजबीन में

तोड़ दिया मैंने

चीनी का प्याला

एक और नुकसान हानी

घाटे पर घाटा सुबह-सुबह"[8]....(कितना कुछ नुकसान हानी)

इस कविता में विनोद कुमार शुक्ल ने पूर्णता से मध्यवर्ग के पारिवारिक स्थिति का वर्णन किया हैं। उनकी आर्थिक स्थिति के बारें में बताया है, 'कितना कुछ नुकसान हानी' यह उनकी लंबी कविता है। उन्होंने अपनी 'कविता से लंबी कविता' काव्य संग्रह में मध्यवर्ग के स्थिति का वर्णन किया है।

"काम पर जाती हुई औरत

इतना सामान्य कि औरत कम

औरत का दृश्य ज्यादा

मेरे देखते कम

सोचते ज्यादा दृश्य में

उस औरत के पीछे-पीछे जाने के लिए

एक लड़का लोहे के कँटीले तार को

रोता हुआ फाँद गया

दूसरा तार के नीचे अधनंगा निकाल गया"[9]...(काम पर जाती हुई

औरत)

इस कविता में कवि ने एक औरत का वर्णन किया हैं जो अपने बच्चों के लिए जी तोड़ काम करती है। इसमें उस औरत के एक-एक वस्तु उसके काम का बारीकी से वर्णन किया हैं। विनोद कुमार शुक्ल ने वर्णनात्मक शैली का उययोग कर पाठकों तक मध्यवर्ग और निम्नवर्ग के समस्याओं उनकी दशा को दर्शाया है।

विनोद कुमार शुल्क अपने काव्य भाषा और शैली के कारण अन्य कवियों से अलग हैं। रचनाकार में इतना कौशल्य है कि वह एक शब्द से अपनी कविता की रचना कर सकता हैं, और वही शब्द उनकी काव्य का सौंदर्य बढ़ाता है। उनके काव्य में मध्यवर्ग के जीवन से जुड़े अनेक शब्द सामने आते है। इसी के साथ लेखक ने अपने काव्य में विदेशी शब्दों का प्रयोग सटीक तरीके से किया है। कवि ने राजनीतिक और आर्थिक स्थिति वाली

कविताओं में प्रतीकों का उपयोग बहुत ही अनोखे ढंग से किया है। उनके प्रसिद्ध प्रतीक है: पिंजरा, घुसपैठियां, आकाश आदि। उसी के साथ कवि ने अपने काव्य में चित्रात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली आदि का प्रयोग कर अपने काव्य का कौशल्य बड़ाया है।

संदर्भ सूची

1) तिवारी (डॉ) आस्था, कवि कथाकार विनोद कुमार शुक्ल का साहित्य, शताक्षी प्रकाशन, रायपुर, 2008, पृ. 43

2) शुक्ल विनोद कुमार, सब कुछ होना बचा रहेगा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1992, पृ. 42

3) वहीं, पृ. 17

4) तिवारी (डॉ) आस्था, कवि कथाकार विनोद कुमार शुक्ल का साहित्य, शताक्षी प्रकाशन, रायपुर, 2008, पृ. 46

5) वहीं, पृ. 50

6) शुक्ल विनोद कुमार, वह आदमी नया गरम कोट पहिनकर चला गया विचार की तरह, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1981, पृ. 34

7) वहीं, पृ. 24

8) शुक्ल विनोद कुमार, कविता से लंबी कविता, राजकमल प्रकाशन, 2001, पृ. 81, 92

9) वहीं, पृ. 91

उपसंहार

समाज में वर्गों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। और इन वर्गों को समाज में विशेष नाम दिया जाता है। जैसे पूंजीपति और श्रमिक वर्ग, इन दोनों के मध्य में आनेवाला मध्यवर्ग है। जिस पर बहुत से विद्वानों ने अपनी परिभाषा रखते हुए मध्यवर्ग का अर्थ बताया है। मूलतः मध्यवर्ग का अस्तित्व भारत में नहीं था , भारत में अंग्रेजों के आगमन के बाद भारतीय समाज में मध्यवर्ग का उद्भव हुआ। मध्यवर्ग के अंतर्गत और तीन वर्ग आते है, उच्च मध्यवर्ग, मध्यम मध्यवर्ग, और निम्न मध्यवर्ग। मध्यवर्ग के इन तीनों हिस्सों के बाद मध्यवर्ग में एक और हिस्सा जुड़ा नव मध्यवर्ग। मध्यवर्ग द्वारा आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों का सामना करना पड़ता हैं।

समकालीन कविता वर्तमान समय पर आधारित होता है, और इस दौर के कवितायें वर्तमान समय के विसंगतियों, सामाजिक स्थितियों, पर आधारित होती है। बहुत से आलोचकों का मानना है कि हर अपने युग की समकालीनता होती है। समकालीन कविताओं पर बहुत से विद्वानों ने अपने अलग-अलग मत रखे है। समकालीन कविता समाज में जागृकता लाने के लिए लिखी जाती है और इन कविताओं में मुनुष्य के स्थिति की गहरी समझ होती है। समकालीन काव्य की कुछ विशेषताएँ

है, जैसे; मोहभंग की स्थिति, रोमानी संस्कारों से मुक्ति, जीवन से सीधा साक्षात्कार, सामाजिक यथार्थ, राजनीतिक चेतना, आक्रोश एवं विद्रोह का स्वर, तीखे व्यंग की प्रधानता, आशावादी स्वर, आम आदमी के दुख दर्द की अभिव्यक्ति, प्रकृतिक चित्रण, काव्य की शिल्पगत वैशिष्ट्य। समकालीन काव्य में इन सभी विशेषताओं का मिलना स्वाभाविक है।

समकालीन हिन्दी साहित्य में विनोद कुमार शुक्ल एक सुप्रसिद्ध कवि, कहानीकार, और उपन्यासकार है। शुक्ल जी को मूलतः कवि के रूप में देखा जाता है। उन्होंने अपने काव्य में समाज के तमाम समस्याओं को दर्शाया हैं। उनमें से एक है मध्यवर्ग का जीवन। कवि विनोद कुमार शुक्ल ने अपने कविताओं में भारतीय समाज के मध्यवर्ग और निम्न मध्यवर्ग के जीवन का यथार्थ को बहुत अच्छी तरीके से अपने काव्य में दर्शाया है। कवि ने संवेदनात्मक नजरिया अपनाकर मध्यवर्गीय जीवन के प्रसंगों, घटनाओं, और उनकी परिस्थितियों को सजीव कर दिया है।

मध्यवर्गीय मनुष्य अपनी रोज़मर्रा के जीवन के लिए हर वक्त संघर्ष करता रहता है। छोटी-छोटी इच्छाओं को पूरा करने के लिए वह अपनी परिस्थितियों से जूझता रहता है। इन सारे मध्यवर्गीय और निम्न मध्यवर्गीय संघर्ष को विनोद कुमार शुक्ल ने अपने कविता के माध्यम से समाज के सामने लाया है।

विनोद कुमार शुक्ल ने मध्यवर्ग की आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, और पारिवारिक स्थिति को बखूबी से दिखाया है। इन सारी परिस्थितियों के कारण उन पर आनेवाली विडम्बना को विनोद कुमार शुक्ल ने व्यंग्यात्मक और प्रतिकात्मक तरीके से सरल भाषा में प्रस्तुत किया है। विनोद कुमार शुक्ल स्वंय मध्यवर्ग से होने के कारण उन्होंने अपने काव्य में उनकी तकलीफ़ों को बारीकी से प्रस्तुत किया है।

मध्यवर्ग समाज का बीच वाला वर्ग हैं। शुक्ल जी ने सामाजिक जीवन पर लिखी कविताओं में उनके सामाजिक संघर्ष को बारीकी से प्रस्तुत किया है। एक मध्यवर्गीय आदमी हमेशा एक अच्छे समाज की इच्छा करता है। जहां सब लोग एक दूसरे के हित में खड़े हो। कवि ने मध्यवर्गीय व्यक्ति की सामाजिक व्यथा को भी दिखाया है, जो अपने हक़ के लिए समाज में लड़ भी नहीं सकता, अपने आप को बेबस समझने लगते है, समाज की समस्याओं को इतना महत्व देते है कि अपने जीवन की समस्याओं पर ध्यान तक नहीं दे पाते अपने से ज्यादा समाज के बारें में सोचने लगते है। कवि ने समाज के कुरीतियों को और उनकी सामाजिक तकलीफ़ों को अपने कविताओं में दिखाया।

राजनीति द्वारा मध्यवर्ग पर किए जाने वाले शोषणों को भी विनोद कुमार शुक्ल ने अपनी साहित्य में लिखा है। राजनीति में होने वाली घुसपैठियों के कारण आनेवाली समस्या और आम आदमी अगर विद्रोह

भी करना चाहे तो नहीं कर पता है। कवि ने राजनीति का अपनी कविताओं के माध्यम से पर्दाफ़ाश किया है। नेताओं का झूठा चेहरा, उनके झूठे आश्वासनों को समाज के सामने लाया है।

उन्होंने साथ ही आर्थिक जीवन के अंतर्गत आनेवाली कविताओं में मध्यवर्गीय लोगों द्वारा सामना किए जाने वाले समस्याओं को दिखाया है। किस प्रकार से उन्हे आर्थिक स्थिति से गुजरना पड़ता है और अगर उन्हे उधार लेना हो तो बैंक वाले उधार देने में हिचकिचाते है। हर समय सिर्फ अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के सपने देखते रहते है और अंत तक प्रयास करते रहते हैं जिससे उन्हें आर्थिक परेशानियाँ न हो। विनोद कुमार शुक्ल ने मध्यवर्ग के आर्थिक स्थिति पर ज्यादा ज़ोर दिया है।

इसी प्रकार से रचनाकार ने मध्यवर्ग के पारिवारिक जीवन को दिखाया है जहाँ आर्थिक स्थिति के कारण परिवारों में समस्याएँ आने लगती है। उन्होंने अपनी कविताओं में कम पैसों में परिवार को संभाला जाता है, आर्थिक परेशानी ठीक हो इस कारण जादू टोटके का सहारा लिया जाता है जो केवल अंधविश्वास है। यहाँ तक की मकान का किराया देने में भी तकलीफ होती है, और अपने बच्चो को झूठ बोलते है कारण उन्हें परिवार की स्थिति के बारें में न पता चले इन सभी परिस्थितियों को दिखाया है। विनोद कुमार शुक्ल ने पारिवारिक जीवन की समस्याओं के साथ किस प्रकार हर मुश्किल में पत्नी अपने पति का साथ देती हैं, आर्थिक

स्थिति सुधारने के कारण काम में हर वक्त व्यस्त होने पर परिवार को समय नहीं दे पाते, अपने बच्चो के बारें में बात नहीं कर पाते इन समस्याओं को भी कवि ने अपने काव्य में दर्शाया हैं। एक आम मध्यवर्गीय व्यक्ति के लिए उसका परिवार एक शिविर की तरह होता है, यह सब उनकी कविताओं में वर्णन मिलता है।

विनोद कुमार शुक्ल ने मध्यवर्ग के समस्याओं को केंद्र में रखकर अपनी कवितायें रची है। कवि ने यह जीवन स्वयः जिया है। वे इस जीवन से वाकिफ है। इस कारण उन्होंने उनकी कविताओं में मध्यवर्गीय और निम्न मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ का सजीव चित्रण किया है। मध्यवर्गीय व्यक्ति को कई समस्याएँ एक साथ सताती है। इन सभी समस्याओं का उन्हें सामना करना पड़ता है। इन सभी परेशानियों को बखूबी से उनकी कविताओं में देख सकते है।

संदर्भ सूची

आधार ग्रंथ

1) शुक्ल विनोद कुमार, वह आदमी नया गरम कोट पहिनकर चला गया विचार की तरह, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1981

2) शुक्ल विनोद कुमार, सब कुछ होना बचा रहेगा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1992

3) शुक्ल विनोद कुमार, अतिरिकता नहीं, वाणी प्रकाशन, 2000

4) शुक्ल विनोद कुमार, कविता से लंबी कविता, राजकमल प्रकाशन, 2001

संदर्भ ग्रंथ

1. वोहरा वंदना, सामाजिक स्तरीकरण तथा परिवर्तन, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2015

2. भिसे (डॉ) रामचंद्रा मुंजाजी, भारतीय समाज इवान महिला सशक्तिकरण, कानपुर, 2013

3. जावेद अस्मा, प्रेमचंद के उपन्यास में मध्यवर्ग : दशा और दिशा, अलीगढ़, 2012

4. त्रिपाठी शंभूरत्न (संपादक), समाजशास्त्रीय विश्वकोष, समाज विज्ञान, किताबघर, 1960
5. घोष (डॉ) श्याम सुंदर, भारतीय मध्यवर्ग, लोकभरती प्रकाशन, 1979
6. ग्रेटन आर.एच, दि इंग्लिश मिडल क्लास
7. गजानन माधव मुक्तिबोध, कामायनी : एक पुनर्विचार, राजकमल प्रकाशन, 1997
8. गुप्ता सीमा, समकालीन हिन्दी उपन्यास : महानगरीय बोध, जयपुर
9. राय (डॉ) सरिता, उपन्यासकार प्रेमचंद की सामाजिक चिंता, वाणी प्रकाशन, 1996
10. यशपाल, दादा कॉमरेड, लोकभरती प्रकाशन, 1997
11. उमाटे (डॉ) साईनाथ, समकालीन हिन्दी कविता का समाजशास्त्र, ए.बी.एस. पब्लिकेशन, वाराणसी, 2016
12. सिंह केदारनाथ, मेरे साक्षात्कार, विनोद दस से बातचीत (साक्षात्कार), किताबघर प्रकाशन, 2008
13. यू (डॉ) श्रीकला, समकालीन हिन्दी कविता और शमशेर बहादुर सिंह, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2008
14. शर्मा (डॉ) ब्रजमोहन, समकालीन कविता और लीलाधार जागुड़ी, दीपू बुक्स, नई दिल्ली, 2010

15. रोहितश्व, समकालीन कविता और सौंदर्य बोध, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1996

16. जोशी राजेश, समकालीनता और साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2010

17. नवल नंदकिशोर, समकालीन काव्य यात्रा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2004

18. पी रवि, समकालीन कविता के आयाम, लोकभरती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2013

19. सिंह वीरेंद्र सं, समकालीन कविता : सम्प्रेषण : विचार : आत्कथ्य, पंचशील प्रकाशन, 1987

20. कमल अरुण, गोलमेज, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2009

21. कुमार (डॉ) राजेंद्र, आलोचना का विवेक, लोकभरती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2004

22. वावलकर शिवदत्ता, उपन्यासकार विनोद कुमार शुक्ल, विद्या प्रकाशन, कानपुर, 2010

23. तिवारी (डॉ) आस्था, कवि कथाकार विनोद कुमार शुक्ल का साहित्य, शताक्षी प्रकाशन, रायपुर, 2008

24. राठोड़ दक्षा आर, विनोद कुमार शुक्ल : व्यक्ति और साहित्य, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट, 2017

25. चक्रवर्ती कस्तुरी, विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, असम विश्वविद्यालय, 2019
26. मिसाल प्रताप राधाकिसन, विनोद कुमार शुक्ल के साहित्य में चित्रित मध्यवर्गीय भारतीय समाज, औरंगाबाद विश्वविद्यालय, 2016
27. चिट्टमपल्ले ज्ञानेश्वर सोनेराव, बाभलगांव महाविद्यालय, 2021

पत्रिका

1. मधुसूदन आनन्द, नया ज्ञानोदय, अंक 222, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2023

Online website

1. https://hi.wiktionary.org/wiki/समकालीन
2. https://hindishabdsindhu.rajbhasha.gov.in/
3. https://cfilt.iitb.ac.in/wordnet/webhwn/wn.php
4. https://ln.run/qsMs3